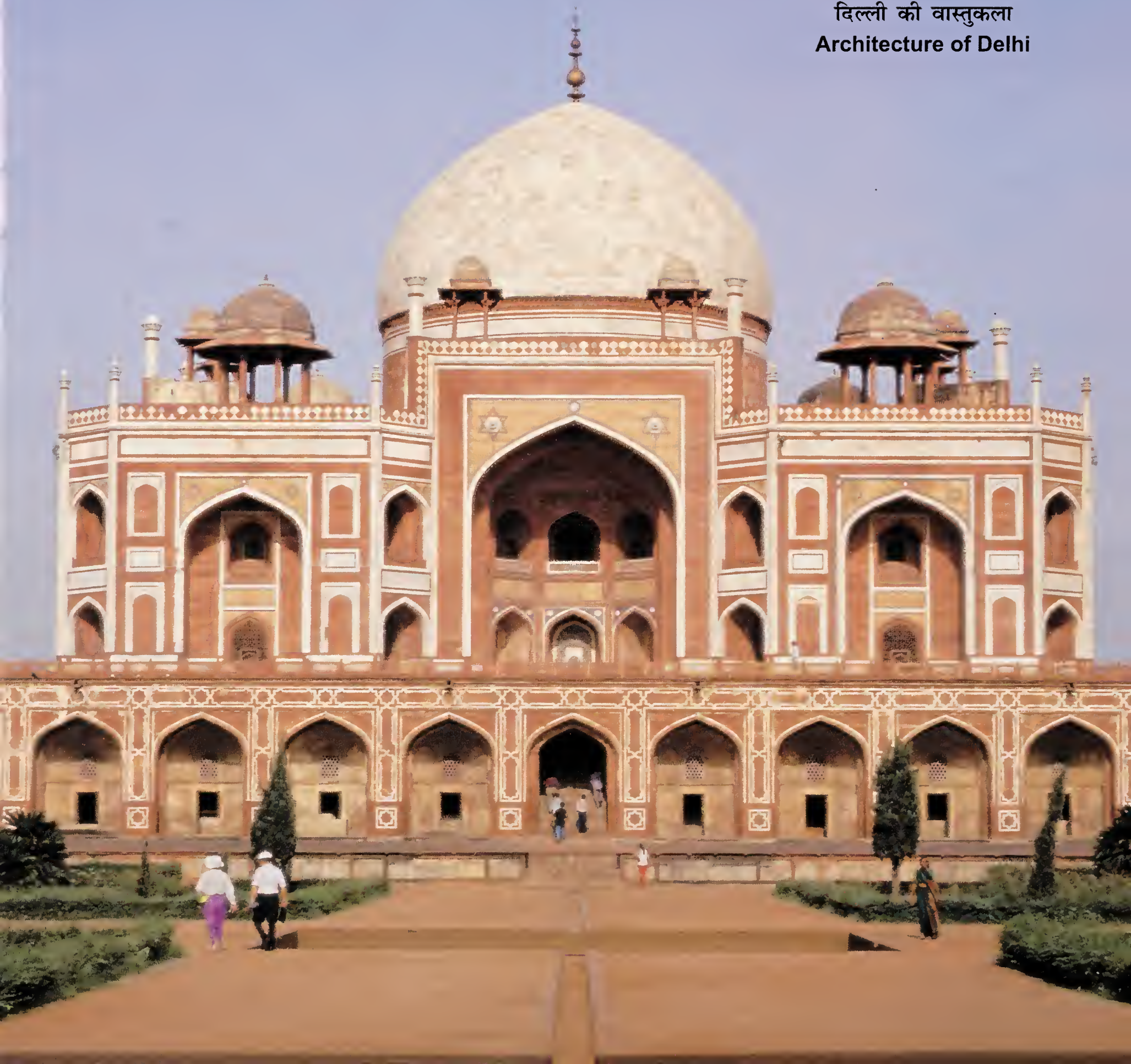





दिल्ली की वास्तुकला Architecture of Delhi



दिल्ली की वास्तुकला
Architecture of Delhi





Digitized by the Internet Archive
in 2018 with funding from
Public.Resource.Org

<https://archive.org/details/architectureofde00cent>

भारत की राजधानी-दिल्ली भारत के सबसे प्राचीन और ऐतिहासिक नगरों में से एक है। यह यमुना नदी के किनारे स्थित है। दिल्ली की पश्चिमी, दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर राजस्थान का रेगिस्तान है, पूर्व में उत्तर प्रदेश के गंगा के मैदान और उत्तर में हिमालय पर्वत श्रृंखला 100 कि.मी. से अधिक दूरी पर नहीं है। दिल्ली नाम, इस नगर के पुराने नामों जैसे दिली, दिल्ली और ढिल्ली से लिया गया है। इस शहर का इतिहास महाभारत के पौराणिक युद्ध के समय से जाना जाता है। 12वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक दिल्ली के इतिहास ने 8 नगरों का उत्थान-पतन देखा है। आज दिल्ली के आठ प्राचीन मध्यकालीन नगर राजधानी की सीमाओं के भीतर ही सम्मिलित हो गए हैं।

किला राय पिथौरा

सन् 1192 में बनी यह पहली शाही राजधानी थी। इस का निर्माण घूर (मध्य एशिया) के मोहम्मद-बिन-सैम जो कि मोहम्मद गौरी के नाम से प्रसिद्ध है, उसने तथा उसके गर्वनर कुतुब-उद्-दीन ऐबक ने करवाया था।

सन् 1060 में तोमर वंश के हिंदू राजा अनंगपाल ने जहां पर लाल कोट का निर्माण करवाया गया था उसी स्थान पर उसकी सीमाओं को बढ़ाकर इस शहर का पुनर्निर्माण करवाया गया। कुतुब-उद्-दीन ऐबक ने जब इस शहर पर विजय प्राप्त की थी तो उसने यहां के 27 हिन्दू और जैन मंदिरों के पत्थर तथा उनके उत्कीर्ण स्तंभों से कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण करवाया। कुव्वत-उल-इस्लाम का अर्थ है-इस्लाम की शक्ति। उसने सन् 1200 में प्रसिद्ध कुतुब मीनार का निर्माण शुरू करवाया था पर उसके निर्माण कार्य को उसके दामाद और उत्तराधिकारी इल्तुतमिश ने सन् 1220 में पूरा करवाया था। 72.5 मीटर ऊंची इस मीनार की आज पांच मंजिलें हैं। 27 लंबी धारियां लेखों से सुसज्जित हैं और इन्हें बाहर की तरफ निकले चार छज्जे विभाजित करते हैं। निचली मंजिलें लाल बलुवा पत्थर से निर्मित हैं तथा उनकी अर्द्ध गोलाकार तथा कोणीय धारियां हैं। सबसे ऊपर की दो मंजिलें लाल पत्थर के साथ मकराने के संगमरमर से निर्मित हैं। इस शहर के अन्य भग्नावशेषों में लौह स्तंभ और अलाई दरवाजा मुख्य हैं। बलुवा पत्थर से बना अलाई दरवाजा कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद में दक्षिण दिशा से प्रवेश करने के लिए बनवाया गया था।

सिरी

अला-उद्-दीन खलजी ने सन् 1303 में वर्तमान हौज खास के समीप दूसरे नगर सिरी की नींव रखी थी। यह खलीफा के निवास के नाम से भी प्रसिद्ध है यद्यपि अला-उद्-दीन के समय में यह किला-अलाई के नाम से जाना जाता था। यह गोलाकार शहर बड़ी मजबूती से बनाया गया था तथा इसके सात दरवाजे थे। यह मूलतः मुसलमानों द्वारा बनवाया गया पहला नगर था। अला-उद्-दीन खलजी एक बहुत अच्छा प्रशासक और योजनाकार था। उसने हौज खास में एक विशाल जलाशय का निर्माण किया, जिसे हौज-ए-अलाई के नाम से जाना जाता है और इसे सिरी के नये नगर की सिंचाई तथा पानी की आवश्यकताओं की पूर्ति के उद्देश्य से बनाया गया था। आज इस विशाल नगर के जो भग्नावशेष बचे हैं उनमें केवल कुछेक पत्थर की दीवारों के हिस्से हैं। वक्त के साथ आज सिरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, सिरी एशियाड गांव तथा सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम के रूप में इसका नाम पुनः उभरकर आया है। ये भवन दिल्ली के बदलते चेहरे को दर्शाते हैं।

तुगलकाबाद

ग्यास-उद्-दीन तुगलक ने सन् 1321 में दिल्ली के तीसरे नगर का निर्माण किया, जिसे तुगलकाबाद के नाम से जाना जाता है। कुतुब परिसर के दक्षिण में लगभग आठ कि.मी. की दूरी पर दिल्ली के तीसरे मध्यकालीन नगर का निर्माण हुआ था। यह किला अपनी योजना में लगभग अष्टभुज है तथा इसकी भारी दीवारें 10-15

Delhi, the capital of India, is one of the most ancient and historic cities of this country. Situated on the banks of river Yamuna, the city borders the state of Rajasthan to its West and South West, the Gangetic plains of Uttar Pradesh to the East and the Himalayan range, is not more than 100 Kms. to its North. The name of the city, “Delhi”, derived from its older names Dili, Dilli, Dhilli traces its history back to the epic war, Mahabharata. During the 12th and 19th centuries the history of Delhi has witnessed the rise and fall of eight cities. Today these eight cities of Delhi are encompassed within the boundaries of the ever expanding capital city.

Quila Rai Pithora

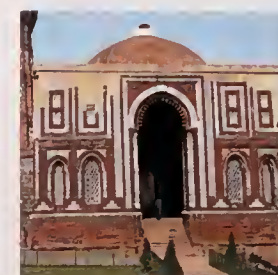
This is the first imperial capital established in 1192 A.D. by Mohammad-bin-Sam of Ghur (Central Asia) popularly known as Mohammad Ghori and his Governor, Qutub-ud-Din Aibak. The city was restructured on the old city of Lal Kot, built in 1060 A.D. by the Hindu Tomar King, Anangpal by extending its boundaries. Following his victory over the city, Qutub-ud-Din Aibak used the carved pillars of 27 Hindu and Jain temples to make a mosque, which came to be called the Quwwatul-Islam mosque—the might of Islam. He began work on the famous Qutub Minar in about 1200 A.D. This minaret was, in fact, completed in 1220 A.D. by Iltutmish, Qutub-ud-Din's successor and son-in-law. It is 72.5 m high and rises in five successive storeys with twenty-seven flutings broken by four projecting balconies decorated with inscriptions. The lower storeys are of red sandstone with semicircular and angled flutings; the two highest storeys are made of red sandstone and Makrana marble. Other important building remains of this city are the Iron Pillar and Alai Darwaza. The sandstone gateway, the Alai Darwaza, was erected to serve as the southern entrance to the Quwwat-ul-Islam mosque.



Siri

Ala-ud-Din Khalji laid the foundation of the second city in 1303 A.D. known as Siri near the present day Hauz Khas. It is also known as “Abode of the Caliphate”. However, in Alaud-Din's time it was called Kila-Alai, a round city (shahr) very strongly built with seven gateways. Siri was the first city which was originally built by the Muslims. Ala-ud-Din Khalji was a very good administrator and planner. He also constructed a vast reservoir at Hauz-Khas known as Hauz-i-Alai which was intended to meet the needs of water and irrigation of the new city of Siri.

What remains of the once mighty city, Siri, are now only a few patches of ruined stone walls. Through the corridors of time the name of Siri once again reverberates as today we have the Siri Institutional Area, the Siri Asiad Village and the Siri Fort Auditorium—monuments to show Delhi's everchanging profile.



Tughlaqabad

Ghiyas-ud-Din Tughlaq built the third city of Delhi known as Tughlaqabad in 1321 A.D. It is approximately eight kms. to the south of the Qutub complex where the third medieval city of Delhi was built. The fort is roughly octagonal in plan with massive walls,



मीटर ऊंची हैं जिसमें 13 दरवाजे तथा बुर्ज हैं। इसके दक्षिणी दरवाजे के सम्मुख लाल पत्थर से निर्मित स्वयं ग्यास-उद्-दीन का मकबरा है। स्वयं बनाए गए इस मकबरे की दीवारों पर संगमरमर का सीमित इस्तेमाल इस किलेनुमा भवन को भव्य बनाता है। वृत्ताकार बलुवा पत्थर की चोटी पर सफेद संगमरमर का गुंबद इस मकबरे का गौरव चिन्ह है। इसने आने वाले वर्षों में मकबरों के निर्माण को काफी प्रभावित किया जैसे कि ताज महल इत्यादि।

जहांपनाहबाद

ग्यास-उद्-दीन के उत्तराधिकारी मोहम्मद-बिन-तुगलक ने जहांपनाहबाद नामक चौथे नगर का निर्माण करवाया, जो मोटे तौर पर किला राय पिथौरा और सिरी के प्राचीन नगरों के बीच दीवारों के घेरे के रूप में था। इसका वर्णन अफ्रीकी यात्री इब्न बतूता ने किया है। सन् 1327 में मोहम्मद-बिन-तुगलक अपनी सारी प्रजा समेत राजधानी को दिल्ली से दक्कन में दौलताबाद ले गया। पर जब वह वापस आया तो उसने दिल्ली में आदिलाबाद शहर के नाम से एक और शहर बसाया। ऐसा विश्वास है कि यहीं उसने 'क़श-ए-हज़ार सुतून' अर्थात् हजार स्तंभों वाला अपना महल भी बनवाया। साथ ही यहां उसने सात दरवाजों वाला-सतपुला-पुल भी बनवाया। इसके जलाशय का विपुल पानी जहांपनाह नगर के काम आता था। मोहम्मद-बिन-तुगलक की एक अन्य आकर्षक इमारत विजय मंडल मीनार है जिस का उपयोग वह अपनी सेना का जायजा लेने के लिए किया करता था। आज भी ये उस युग के साक्षी के रूप में खड़े हैं।

फिरोज़ाबाद

तुगलक वंश के तीसरे बादशाह फिरोज़ शाह तुगलक ने अपनी नई राजधानी सन् 1354 में यमुना नदी के दांये किनारे पर बनाई। इसे फिरोज़ाबाद कहा जाता था तथा यह दिल्ली का पाँचवा नगर था। यह एक घनी बसी राजधानी थी तथा यह दक्षिण में हौज खास से लेकर उत्तर की पर्वत श्रेणी और पूर्व में यमुना के किनारे तक फैली हुई थी। कुश्क-ए-फिरोज़ या फिरोज़ शाह का महल राजधानी की मुख्य इमारत थी। इसे अब फिरोज़शाह कोटला के नाम से जाना जाता है। फिरोज़शाह, अंबाला के निकट टोपरा तथा मेरठ के निकट से दो खुदे हुए सम्राट अशोक के समय के स्तंभ दिल्ली लाया और उन्हें दिल्ली में ही स्थापित किया। एक स्तंभ को उसने फिरोज़शाह कोटला में तथा दूसरे को पर्वत श्रेणी-बाड़ा हिंदू राव के समीप स्थापित करवाया था। उसने कुतुब मीनार की मरम्मत करवायी तथा नहरें और सड़कें बनवाईं।

तुगलकों का शासन सन् 1414 में समाप्त हुआ और उसके बाद उनका स्थान सैय्यदों ने लिया और तत्पश्चात् लोदी वंश ने शासन किया। सैय्यद और लोदी वंश के शासन काल के अन्तर्गत निर्माण गतिविधियां कम हुईं। सन् 1526 में मुगल बादशाहों में बाबर प्रथम ने उत्तर भारत के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की और अपनी राजधानी आगरा में बनाई।

दीन पनाह

बाबर के पुत्र और उत्तराधिकारी, द्वितीय मुगल सम्राट हुमायूँ ने दिल्ली की छोटी राजधानी नगरी-दीन पनाह के नाम से यमुना नदी के दांये किनारे पर बसाई। उस नगर में एक किला (पुराना किला) था जहां राजसी परिवार रहता था और नगर की जनता का रिहाईशी क्षेत्र और नगर भी था। यह नगर-दुर्ग अष्टकोणीय है तथा कोनों पर विशाल बुर्ज हैं। इस में प्रवेश इसके पश्चिमी दरवाजे-बड़ा दरवाजा से किया जाता है।

सन् 1540 में शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को युद्ध में पराजित किया तथा उसे भारत से भागने पर मजबूर किया था। आज भी शेरशाह द्वारा निर्मित किला-ए-कुनहा मस्जिद और एक अष्ट-भुजाकार शेर मंडल इस पुराने नगर, किले के क्षेत्र में मौजूद हैं।

15 वर्षों के पश्चात् शेरशाह सूरी की मृत्यु के बाद हुमायूँ ने पानीपत में सूरियों को हरा कर इस शहर पर पुनः कब्जा कर लिया। लेकिन सन् 1557 में शेर मंडल

10 to 15 metres high with bastions and 13 gateways. Across the main entrance to the south of the octagonal is the red sandstone tomb of Ghiyas-ud-Din himself. A restrained use of marble on the walls of the self-built tomb gives this fortress like structure a distinguished look. A white marble dome with a circular sandstone marks the crowning glory of this exquisite tomb.

It influenced the evolution of tomb structures such as the Taj Mahal in later years.

Jahanpanahbad

Ghiyas-ud-Din's successor Mohammad-bin-Tughlaq raised the fourth city Jahanpanah which largely comprised of a walled enclosure between the old cities of Qila Rai Pithora and Siri. A description of this is provided by the African traveller, Ibn Battuta, who lived in Delhi for eight years. In 1327 A.D. Mohammad-bin-Tughlaq transferred not merely the capital but also the entire population of Delhi to Daulatabad in the Deccan. On his return to Delhi, he made yet another city for Delhi, the city of Adilabad. Here he made his palace of a 'thousand pillars' or the 'Qash-i-hazar Sutoon'. He also constructed Satpula—Bridge of the Seven Openings—a reservoir which retained a vast sheet of water for the city of Jahanpanah. Another fascinating building of Mohammad-bin-Tughlaq is the Vijay Mandal, a tower used by him for reviewing his troops. All these still stand as evidence of his era.

Firozabad

Firoz Shah Tughlaq, the third Tughlaq ruler, founded the city of Firozabad in 1354 A.D. It was a populous capital which extended from Hauz Khas in the south to the north of the Ridge and eastward to the river Yamuna. Kushik-i-Firoz or Palace of Firoz was the principal building in the capital. It is now known as Firoz Shah Kotla. He brought two inscribed Ashokan columns from Topra near Ambala and Meerut and erected them in Delhi—one at Firoz Shah Kotla and the other on the Ridge, near Bara Hindu Rao. He repaired the Qutub Minar and built canals, roads and pavilions.

The Tughlaq rule ended in 1414 A.D. when it was replaced by the Saiyads and later by the Lodis. Under the Saiyads and Lodis there was little impetus for new constructional activities. In 1526 A.D. Babur, the first, in the line of Mughal kings gained victory over portions of north India with his capital in Agra.

Din Panah

Humayun, the second Mughal emperor, son and successor of Babur constructed the sixth capital city of Delhi under the name of Din-Panah, again on the right bank of river Yamuna. The city comprised of a fortified citadel (Purana Quila) where the royal family lived and which also had the residential area of the city population. The citadel is rectangular in shape with massive corner bastions. The entrance to the fort is through the west gate, the Bada Darwaza.

In 1540 A.D., Humayun was defeated in battle by Sher Shah Suri and was forced to flee from India. At present, Qila-i-Kunha Masjid and the octagonal Sher Mandal which were built by Sher Shah, still exist within this old fort area. Fifteen years later, after Sher Shah's death, Humayun defeated the Surs at Panipat and



की सीढ़ियों से फिसलकर उसकी मृत्यु हो गई। सन् 1565 में उसकी पत्नी हमीदा बानू ने उसके मकबरे को बनवाना शुरू करवाया था। इस मकबरे को बनने में लगभग नौ वर्ष लगे तथा यह भारत में इस्लामी वास्तुकला के विकास का एक जगमगाता प्रतिचिन्ह है।

शाहजहानाबाद

अकबर के पौत्र शाहजहां ने जब आगरा को भी बहुत भीड़-भाड़ वाला पाया, तो यमुना के दांये किनारे पर एक स्थान चुना और सातवीं दिल्ली का निर्माण किया, जिसका नाम शाहजहानाबाद था। आज इसे पुरानी दिल्ली कहा जाता है। लाल किले का निर्माण 16 अप्रैल, 1639 में शुरू हुआ था तथा वह नौ वर्षों में बनकर तैयार हुआ। योजना में यह लगभग असमान अष्टभुजाकार है। ऊंची प्राचीरों वाली दीवारें चारों तरफ होती हुई नदी के सम्मुख उत्तरी एवं दक्षिणी छोरों पर तीन मंजिली मीनार के रूप में खत्म होती है। इसके वैसे तो 12 दरवाजे हैं पर प्रमुख है—लाहौरी दरवाजा तथा दिल्ली दरवाजा। किले के अंदर दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास जैसी इमारतें हैं, जहां मुगल राजसी परिवार शासन करता और रहता था। लाल किले के बाहर जामा मस्जिद और अंदर मोती मस्जिद दिल्ली के सातवें नगर की भारत-इस्लामी वास्तुकला के कुछ श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

शाहजहानाबाद सन् 1857 तक मुगलों की राजधानी के रूप में रहा।

नई दिल्ली

राजधानी नई दिल्ली ब्रिटिश काल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। दिल्ली के इस आठवें नगर के डिजाइन तथा प्रदर्शित रूप तैयार करने का काम दो वास्तुकारों, सर एडविन लुचियंस और सर हर्बर्ट बेकर को सौंपा गया। सन् 1911 में दिल्ली ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी बनी तथा सन् 1926 में अधिकारिक तौर पर इसे नई दिल्ली नाम मिला। जनवरी 1931 में इसे औपचारिक रूप से अधिकार के लिए उद्घाटित किया गया।

इस समय की अन्य महत्वपूर्ण इमारतें हैं—पार्लियामेंट हाऊस, सेक्रेटेरिएट ब्लॉक्स, गोलाकार खरीददारी केन्द्र—कनॉट प्लेस और कई अन्य।

बहुत से गुरुद्वारे, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और आधुनिक इमारतें हैं, जो आज भी इस महान नगर की जीवित शक्ति के प्रति सबूत के रूप में खड़ी हैं।

दिल्ली की सैर शुरू करने का सर्वाधिक योग्य स्थल है—आल इंडिया वार मेमोरियल अर्थात् इंडिया गेट। यह राजपथ के पूर्वी किनारे पर स्थित है। सर एडविन लुचियंस द्वारा प्रारूपित किए गए इस पत्थर से निर्मित विशाल मेहराबदार स्मारक का निर्माण उन 70,000 शहीदों की याद में किया गया था जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में अपने प्राणों का बलिदान दिया था।

340 कमरों तथा विशाल हरे-भरे मैदानों वाला राष्ट्रपति भवन किसी भी शासनाध्यक्ष के निवास के सर्वथा उपयुक्त है। यह भारत के महामहिम राष्ट्रपति का सरकारी निवास है।

regained control of the city. He died in 1557 A.D. when he fell from the stairs of Sher Mandal. The construction of Humayun's tomb was taken up by Hamida Banu in 1565 A.D. The complex took nine years to complete, and the tomb itself is a dazzling landmark in the evolution of Mughal architecture in India.

Shahjahanabad

Shahjahan, grandson of Akbar, finding Agra too congested, selected a site on the right bank of river Yamuna and constructed the seventh Delhi to be known as Shahjahanabad, now known as Old Delhi. The building of the Red Fort or Lal Quila commenced on April 16, 1639 and took over nine years to build. In plan it is an irregular octagon with high battlemented walls carried around the city side to terminate in three-storey towers at the north and south ends of the river frontage. It has twelve gates, the principal ones are the Lahori and Delhi gates. Inside the Red Fort are the buildings; such as Diwan-i-Am, Diwan-i-Khas where the Mughal royal family lived and reigned. In 1648 A.D. Shahjahan finally shifted the capital from Agra to Delhi. The Jama Masjid outside Lal Quila and the Moti Masjid within Lal Quila are excellent examples of Indo-Islamic architecture of the seventh city of Delhi. Shahjahanabad functioned as the Mughal capital till 1857 A.D.

New Delhi

The great capital of New Delhi is one of the achievements of the British Empire. Two architects, Sir Edwin Lutyens and Sir Herbert Baker were assigned the task of designing and layout of the eighth city of Delhi. Delhi became the capital of the British empire in 1911 A.D., officially named 'New Delhi' in 1926 A.D. and was formally inaugurated for occupation in January 1931 A.D.

The most appropriate starting point for any tour of New Delhi is the All India War Memorial, popularly known as India Gate situated at the east end of Rajpath. It is a huge stone memorial arch designed by Sir Edwin Lutyens to commemorate more than 70,000 Indian soldiers who fell in the First World War.

Rashtrapati Bhawan with its 340 rooms and lavish grounds is the official residence of the President of India. Other important buildings of the period are the Parliament House, Secretariat Blocks, a circular marketing centre—the Connaught Place and others. There are many mosques, gurudwaras, temples, churches and modern buildings which stand testimony to the living vitality of this great city.



स्कूली छात्रों और अध्यापकों हेतु रचनात्मक गतिविधियां

CREATIVE ACTIVITIES FOR SCHOOL STUDENTS AND TEACHERS

इस शैक्षिक सामग्री में भारत की राजधानी दिल्ली की प्रसिद्ध इमारतों तथा ऐतिहासिक स्थानों के 22 चित्र हैं। इन चित्रों को कक्षा या फिर स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर प्रदर्शित किया जा सकता है। चित्रों को शीर्षक तथा विवरण सहित कार्ड बोर्ड पर लगाया जा सकता है। रोज इन चित्रों को देखकर तथा जानकारी को पढ़ कर छात्र दिल्ली नगर की प्रसिद्ध इमारतों के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

इन चित्रों का शैक्षिक मूल्य केवल ऐसी गतिविधियों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, जो छात्रों में दिलचस्पी उत्पन्न करती है तथा उन्हें सम्मिलित करती है।

“वह स्थान जहाँ मैं रहता हूँ” पर छात्रों के लिए परियोजनाएं

दिल्ली के स्मारकों पर यह शैक्षिक सामग्री बहुत-से वंशों और राजाओं की कहानी बताती है, जो रहे और जिन्होंने दिल्ली को वर्तमान में नगर के रूप में बनाने के लिए सुन्दर इमारतों का निर्माण किया। आप जिस गांव, शहर या नगर में रहते हैं, उस पर आप तथा आपके छात्र कई परियोजनाएं ले सकते हैं। हमें अपने पूर्वजों के काम की सराहना करनी चाहिए और बीते हुए समय के साथ वर्तमान को समझना चाहिए।

छात्रों को निजी तौर पर या फिर समूहों में चित्र, लेख, समाचार, पुस्तिकाएं आदि एकत्रित करके “वह स्थान जहाँ मैं रहता हूँ” पर जानकारी एकत्रित करने के लिए कहा जा सकता है। सर्वेक्षण में निम्नांकित विषय आने चाहिए :

- मौसम (राज्य/प्रदेश)
- प्राकृतिक विरासत (वन, नदियां, वन्य, जीवन, वनस्पति)
- कृषि (वार्षिक कृषि चक्र, फसलें, अनाज, धान)
- निवासी, समुदाय के सदस्य
- व्यवसाय (समुदाय की आय बढ़ाने वाली गतिविधियां)
- क्षेत्र में रहे प्रसिद्ध लोग, उनका काम और विविध क्षेत्रों में उनका योगदान
- भाषाएं, रीति-रिवाज, मेले और त्यौहार, धर्म।
- महत्वपूर्ण स्थान (ऐतिहासिक स्थान, स्मारक, संग्रहालय और बाग)
- संगीत, नृत्य, नाटक, क्षेत्र के शिल्प
- महत्वपूर्ण सामाजिक, सरकारी और व्यावसायिक संस्थान
- नगर की सेवाएं और सुविधाएं (बिजली, जल, अस्पताल आदि)

The educational package contains 22 pictures of famous buildings and historical sites of the city of Delhi, the capital of India. These pictures can be displayed in the classroom, at any prominent place in the school. The pictures can be stuck on cardboard, with the title and description. Students looking at these pictures, each day, and on reading the information will gather some knowledge of the famous buildings of Delhi city.

The education value of these pictures can be obtained only through activities that interest and involve the participation of students.

Students Projects on “The place where I live”

This package on Delhi monuments tells the story of many dynasties and kings who lived and built beautiful buildings to make Delhi the city it is today. You and your students can also undertake several projects on the village, city and town that you live in. We should appreciate the work of our forefathers and understand the present in relation to our past.

Students, individually or in groups can be asked to collect information about “The place where I live”, by collecting pictures, articles, news items, pamphlets etc. The topics to be covered in the survey should be :

- Climate (State/Region)
- Natural heritage (forests, rivers, wildlife, vegetation)
- Agriculture (annual agricultural cycle, crops, cereals, grains)
- Inhabitants, members of the community
- Occupations (Income generating activities of the community)
- Famous people who lived in the area, their work and contributions in various fields.
- Languages, customs, fairs and festivals, religions.
- Important places (historical sites, monuments, museums & parks)
- Music, Dance, Theatre, Crafts of the area
- Important social, governmental, vocational institutions
- Services and facilities of the city (Electricity, water, hospitals, etc.)



साक्षात्कार : वह स्थान जहां मैं रहता हूं : भूतकाल और वर्तमान

छात्रों से मित्रों, संबंधियों पड़ोसियों से साक्षात्कार करने के लिए कहिए और पिछले 20 वर्षों से उनके जन्म स्थान में हुए परिवर्तनों पर टिप्पणियां एकत्रित करने के लिए कहिए।

सर्वेक्षण के अन्तर्गत बताएं सभी विषयों को इसके अंतर्गत लें।

- मौसम
- प्राकृतिक विरासत
- कृषि
- व्यवसाय
- सामाजिक जीवन
- लोग
- वे लोग जो अन्य स्थानों से इस नगर में बसने के लिए आए।

आप छात्रों द्वारा एकत्रित सामग्री को प्रदर्शनी के रूप में भी प्रदर्शित कर सकते हैं।

छात्रों के शैक्षिक दौरे :

नवीन अनुभवों द्वारा अपने पर्यावरण का अध्ययन करने हेतु छात्रों को समूहों में परियोजनाएं दी जानी चाहिए। 'सर्वेक्षण' और 'साक्षात्कार' जैसी गतिविधियों में अच्छी जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद उनके लिए देखने, ध्यान और अध्ययन करने का समय है। यहां पर छात्रों के लिए कुछ सामूहिक परियोजनाएं दी जा रही हैं ताकि छात्र अपने पर्यावरण का विस्तृत तथा सुव्यवस्थित रूप में अध्ययन कर सकें।

- गांव, नगर या शहर का मानचित्र बनाओ
- उसमें स्कूल तथा महत्वपूर्ण स्थान जैसे स्मारक, बाग, प्राणी उद्यान आदि दिखाओ
- स्थान की आवश्यकताओं का अध्ययन करो—सफाई, परिवहन, जन सुविधाएं
- जनसंख्या/भूमि अनुपात/व्यवसाय/सेवा सुविधाएं (अस्पताल, स्कूल) पर आंकड़े एकत्रित करो
- निम्न पर जानकारी एकत्रित करो :
 - : वायु प्रदूषण
 - : ध्वनि प्रदूषण
 - : कूड़े-करकट संग्रह की समस्या
 - : दूषित जल
 - : गंदी सड़कें
 - : यातायात की कठिनाईयां
 - : आवास समस्या



Interviews: “The place where I live”: Past and Present

Ask students to interview friends, relative, neighbours and collect information on the change that have occurred in your native place over the past twenty years.

Cover all the topics given under Survey

- Climate
- Natural Heritage
- Agriculture
- Occupations
- Social Life
- People
- People who came from other places to settle in this city.

You can display the material collected by students in the form of an exhibition.

Students' Educational Tours:

Students in groups may be given projects to study their environment through first-hand experiences. Having obtained a good background in activities “Survey” and “interview”, it is time for them to look, observe and study. Here are some group projects for students, to enable them to study their environment in a detailed and methodical manner.

- Make a map of the village, city, town
- Locate the school, important places such as, monuments, gardens, zoological parks
- Study needs of the place—sanitation, transport, public amenities
- Collect data on population/land ratio, occupation, service facilities (hospitals, schools)
- Collect information on :
 - : Air Pollution
 - : Noise Pollution
 - : Garbage Collection problems
 - : Contaminated water
 - : Unclean streets
 - : Traffic difficulties
 - : Housing problems

अपने स्थान के ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण करें

निम्नलिखित गतिविधियां करो :

- भवन की प्रमुख विशेषताओं को लेते हुए ऐतिहासिक स्थान पर एक छोटा नोट बनाओ।
- स्थान का मानचित्र बनाओ।
- चित्र बनाओ।
- संबंधित फोटोग्राफ्स और लेख एकत्रित करो।
- इस स्थान का जिन लोगों ने दौरा किया है, उनकी सूची बनाओ और उनका दौरा करने का कारण भी बताओ।

अब जबकि छात्रों ने अपने रहने के स्थान का अध्ययन कर लिया है तो उनके पास इस बात की जानकारी है कि वह स्थान ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रकृति का है, इसके साथ ही, छात्र बुजुर्ग लोगों के साथ बात करके और साक्षात्कार करके कुछ प्राप्त कर चुके होंगे और देखभाल हेतु स्थानों का दौरा करने तथा अपनी सांस्कृतिक विरासत की ओर ध्यान देने का ज्ञान प्राप्त कर चुके होंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह शैक्षिक अनुभव छात्रों के लिए “स्वयं करके सीखो” का अवसर प्रदान करता है जो शिक्षा का एक स्थायी रूप है और जिसे हम अपने छात्रों को दे सकते हैं।

छात्रों के निबंध/लघु कथाएं/कविताएं

छात्रों को नीचे बताए विषयों पर लघु निबंध, कहानी अथवा कविता लिखने के लिए कहा जा सकता है :

- वह स्थान जहां मैं रहता हूँ
- मेरा गृह नगर : भूतकाल और वर्तमान समय में
- वह स्थान जहां मैं रहता हूँ, वह _____ के लिए प्रसिद्ध है
- मैं अपने नगर से प्यार करता हूँ
- वह समस्याएं जिनका आज हम सामना कर रहे हैं
- मेरे गृह नगर की डायरी
- हमारे आसपास का सौन्दर्य
- 21वीं सदी में मेरा नगर
- एक हजार वर्ष पूर्व का मेरा गृह नगर
- मेरे नगर की आत्मकथा आदि।

चित्र बनाईए

- वह स्थान जहां मैं रहता हूँ
 - घर के अलावा अन्य स्थान
- छात्र भारत में अन्य स्थानों की जानकारी, लेख, चित्र और फोटोग्राफ्स एकत्रित करने हेतु चुन सकते हैं :
- ऐतिहासिक स्थान
 - धार्मिक स्थान
 - प्रसिद्ध लोग और वह कहाँ के हैं
 - औद्योगिक विकास
 - कृषि
 - धरती और उसके लोग



Visit historical sites in your place

Undertake the following :

- Write a short note on an historical site, covering chief characteristics of the building
- Draw a map of the site
- Paint a picture
- Collect related photographs and articles
- Make a list of important people who had visited this place and record the reason for their visit.

Now that students have studied the place where they live, they will have information that is historical, scientific, social, economic and political in nature. Added to this, the students will have acquired some values by speaking and interviewing older people, visiting sites to care and look after their cultural heritage. Most important, this educational experience is an opportunity for students to “learn by doing” which is the most lasting form of education we can provide to our students.

Essay/Short Stories/Poems

Students can be asked to write a short essay, story or poem on such topics :

- The place where I live
- My Home town: It's past and present
- The place where I live is famous for...
- I love my city
- The problems we face today
- A diary of my home town
- The beauty that surrounds us
- My city in the 21st century
- My home town one thousand years ago
- Autobiography of my city and, so on...

Paint a picture

- The place where I live
- Other places beyond my home

Students can choose to collect information, articles, pictures/ photographs of other places in India

- Historical sites
- Religious sites
- Famous people and where they come from
- Industrial development
- Agriculture
- Land and its people



प्रश्नावली

अध्यापक छात्रों द्वारा संयोजित परियोजना कार्य और शैक्षिक सामग्री के चित्रों पर आधारित प्रश्नावली तैयार कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, छात्रों को इस पैकेट में दिए गए 22 शैक्षिक सामग्री के चित्रों और जानकारी पत्रों को देखना चाहिए तथा उनका अध्ययन करना चाहिए। छात्रों को समूहों में बांटो, समूहों को नाम दो और छात्रों को प्रश्नावली के नियमों की जानकारी दो।

अध्यापक/प्रश्नावली प्रधान-टीम से प्रश्न पूछेगा। उसे इन प्रश्नों को स्पष्ट रूप से दोहराना चाहिए।

उत्तर के लिए 30 सेकेण्ड का समय होगा।

यदि उत्तर सही है तो टीम को अंक मिलेंगे।

यदि नहीं तो—

प्रश्न दूसरी टीम के पास अतिरिक्त प्रश्न के रूप में चला जाएगा।

उत्तर के लिए 10 सेकेण्ड का समय होगा।

अतिरिक्त प्रश्न का सही उत्तर होने पर अंक मिलेगा।

अध्यापक/प्रश्नावली प्रधान को श्रोताओं के समझने हेतु सही उत्तर को स्पष्टतः दोहराना चाहिए।

एक प्रश्नावली कार्यक्रम 30-40 मिनट तक चल सकता है।

इस संबंध में अध्यापक/प्रश्नावली प्रधान का निर्णय अंतिम होगा।

इस शैक्षिक सामग्री पर सुझायी गयी प्रश्नावली :

सामान्य

निम्न देशों की राजधानियों के नाम बताओ :

भारत

श्रीलंका

मायन्मार

पाकिस्तान, आदि।

— दिल्ली का नगर कितना प्राचीन है।

— जनवरी, मई, अक्टूबर में दिल्ली के मौसम का वर्णन करो।

— दिल्ली के आसपास के राज्यों के नाम बताओ।

— मध्यकालीन एवं आधुनिक काल के सम्बन्धित दिल्ली नगर के आठ नाम बताइए।

चित्र-1 — लौह स्तंभ कितना पुराना है?

— उसकी ऊंचाई कितनी है?

— इसे किस काल में बनाया गया?

चित्र-2 — कुतुब मीनार को क्यों बनाया गया?

— कुतुब मीनार को बनाने हेतु किस सामग्री का उपयोग किया गया?

— सुलेखन (खुशनवीस) क्या होता है?

चित्र-4 — मकबरा क्या होता है?

चित्र-8 — शेर मंडल की सीढ़ियों से कौन से महान मुगल बादशाह की गिर कर मृत्यु हो गई थी?

चित्र-9 — हुमायूँ का मकबरा को बनाने के लिए जिन सामग्री का उपयोग किया गया था, उसका वर्णन करो।

— हुमायूँ का मकबरा तो एक नमूना था, जिसके आधार पर भारत में अन्य प्रसिद्ध इमारत बनाई गई थी। इस इमारत का नाम बताओ।

Quiz

Teachers can make a quiz based on the pictures in the package and the project work conducted by students. For instance, students must see and study the pictures and information sheets, given in this packet.

Divide students into groups, name the groups and inform them of the rules of the quiz.

The Teacher/Quiz master will ask the questions to the team. He must repeat the questions clearly.

30 seconds are allowed for the answer.

If the answer is correct, the team gets 2 points

IF NOT

The Question goes to the next team as a BONUS QUESTION.

10 seconds are allowed for the answer.

A correct answer to Bonus Question get 1 point.

The Teacher/Quiz Master must repeat the correct answer clearly for the audience to understand.

A QUIZ PROGRAMME can be run for 30-40 minutes. The decision of the Teacher/Quiz Master will be final.

Suggested Quiz on this Follo:

General

— Name capital of :

India

Sri Lanka

Mayanmar

Pakistan, etc.

— How ancient is the city of Delhi?

— Describe the climate of Delhi in Jan/May/Oct...

— What are the States that surround Delhi?

— Eight cities have been built in Delhi, name them.

Picture 1

— How old is the Iron Pillar?

— What is its height?

— In which period was it made?

Picture 2

— Why was the Qutub Minar built?

— What materials were used to build the Qutub Minar?

— What is Calligraphy?

Picture 4

— What is a tomb?

Picture 8

— Which great Indian Emperor fell down the stairs of Sher Mandal and died?

Picture 9

— Describe the material used to build Humayun's Tomb.

— Humayun's Tomb was the model on which another famous building built in India. Name this building.



चित्र-13 – मस्जिद क्या होती है?

- भारत की 4 प्रसिद्ध मस्जिदों तथा मकबरों का नाम बताओ।
- इसे किस काल में बनाया गया?

चित्र-14 – राष्ट्रपति भवन को मूलतः के निवास स्थान हेतु बनाया गया था।

- आज राष्ट्रपति भवन में कौन रहता है?

चित्र-15 – इंडिया गेट—यह इमारत किस का स्मारक है?

चित्र-17 – संसद भवन—इसके वास्तुविद् का नाम बताओ।

- भारत की संसद में क्या-क्या है?
- अपने जिले/राज्य के संसद सदस्यों के नाम बताओ

चित्र-13, 19, 20, 22

- निर्माकित धर्मों के शिक्षात्मक उपदेश या एक अनुच्छेद का पाठ करो :
- हिन्दू धर्म
- इस्लाम धर्म
- सिख धर्म
- बौद्ध धर्म
- जैन धर्म
- ईसाई धर्म

ईसाईयों, हिन्दूओं, सिखों, पारसियों, जैनियों और बौद्धों के धार्मिक महत्व के स्थानों के नाम बताओ।

ऊपर सुझाए अनुसार अपने निजी प्रश्न बनाओ।

प्रश्नावली (लिखित और मौखिक) मूल्यांकन का एक मजेदार रूप है।

छात्रों को विभिन्न विषयों पर महीने में एक बार ऐसे प्रश्नावली कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर दो।

“वह स्थान जहां मैं रहता हूँ” नामक परियोजना पर इसी प्रकार का प्रश्नावली कार्यक्रम संयोजित करो ताकि सभी छात्र भारत के विकास में, उसके अपने लोगों द्वारा दिए गए योगदान तथा महत्व को जान सकें और समझ सकें।

कार्य के लिए परियोजना : “मैं जिस नगर से प्यार करता हूँ—उसमे मेरा योगदान”

छात्र सबसे पहले इस विषय पर चर्चा कर सकते हैं कि वे अपने नगर और गृह नगर को सुधारने के लिए क्या-क्या कर सकते हैं— जैसे सफाई अभियान, पोस्टर, शिक्षा, समाज सेवा, वृक्षारोपण, सही अनुशासन और व्यवहार के लिए पंक्तियां बनाना, पंक्तियों में खड़े रहना आदि।

पोस्टर अभियान :

छात्रों से पर्यावरण को सुरक्षित रखने में उनकी भूमिका पर सुझाव देते हुए (12" × 15" आकार के कागज) एक पोस्टर बनाने के लिए कहा जा सकता है।

कृपया छात्रों को वे जिस स्थान पर रहते हैं, वहां के विषय में सीखने और उस के विकास में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

Picture 13

— What is a masjid?

— Name four famous masjids and tombs of India.

Picture 14

— Rashtrapati Bhawan was originally built as a residence for.....

— Who lives in Rashtrapati Bhawan today?

Picture 15

— India Gate—What does the building commemorate?

Picture 17

— Parliament House—Name its architect.

— India's Parliament consists of _____ and _____ .

— Name the members of Parliament from your district/state.

Picture 13, 19, 20, 22

— Recite one passage or Teaching of a principle of the following religions:

- Hinduism
- Islam
- Sikhism
- Buddhism
- Jainism
- Christianity

— Name places of religious importance to the Christians, Hindus, Sikhs, Parsis, Jains, Buddhists.

Make your own questions as suggested above.

Quiz (written and verbal) is an enjoyable form of evaluation.

Let students participate in such Quiz programmes once a month on different topics.

Conduct the same sort of Quiz programme based on the Project “Place where I live” so that all the students know and understand the importance and contributions made by their own people to the development of India.

Project for Action : “My contribution to the city that I love”

Students can first discuss what they can do to improve their city and home town, cleaning campaigns, posters, education, social service, planting trees, forming queues for orderly behaviour and discipline, etc.

Poster Campaign :

Students may be asked to prepare a picture (12" × 15" size paper) giving suggestions on their role in caring for the environment.

Students can create slogans for the poster, for the cleanliness, protection and care of their home town.





CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING

15-A, Sector-7, Dwarka, New Delhi-110 075

Phone : 91-11-25309300, Fax : 91-11-25088637

email : dir.ccrtnic.in

website : www.ccrtnic.in

दिल्ली की वास्तुकला

1. लौह स्तंभ

कुतुब परिसर में स्थित यह 7.20 मीटर ऊंचा लौह स्तंभ वास्तव में उतना साधारण नहीं है जितना कि यह देखने में लगता है। अति शुद्ध लोहे को ढालकर बनाए गए इस स्तंभ को बने लगभग 1500 वर्ष हो गए हैं पर अभी तक इस पर जंग तक नहीं लगा है।

मूलत: यह स्तंभ 5वीं शताब्दी में मथुरा में निर्मित हुआ था तथा 12वीं शताब्दी में वहां से दिल्ली लाया गया था। आधार में इसका घेरा 6 फुट और 4 इंच है तथा ऊंचाई पर जा कर यह परिमाप 2 फुट 4 इंच रह जाता है।

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद की यह इमारत, जिसके सहन में यह लौह स्तंभ खड़ा है वास्तव में सन् 1196 में शुरू हुए पहले दिल्ली सल्तनत के इस्लामी शासकों के आक्रमणों से सदियों पहले के हिंदू कारीगरों के वैज्ञानिक ज्ञान तथा कला-कौशल का अनूठा स्मारक है। इस स्तंभ के सम्मुख दिखाई देने वाली मेहराबें लगभग दस वर्ष बाद कुतुब-उद्-दीन ने बनवाई थीं। उसके उत्तराधिकारी इल्तुमिश ने सन् 1210 में इस के उत्तर और दक्षिण में जालियां और विशाल चौक बनवा कर इस का विस्तार किया।

इस स्तंभ की उत्पत्ति के संबंध में इतिहास अनेक व्याख्याओं को प्रस्तुत करता है। स्तंभ के एक गुप्तकालीन लेख से ज्ञात होता है कि यह मूलत: विष्णुध्वज था जिसे राजा चंद्र की याद में बनवाया गया था। इस भव्य स्तंभ के समतल तथा चौकोर ऊपरी छोर में एक आला था जिसमें भगवान विष्णु के वाहन-गरुड़-की आकृति थी।

यह एक दिलचस्प मान्यता है कि अगर कोई व्यक्ति इस की तरफ पीठ करके इसे अपनी बांहों में घेर ले और कोई मन्त्रत मागे तो उसकी इच्छा अवश्य पूरी हो जाती है।

2. कुतुब मीनार

भारत की वास्तु निर्माण कला की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों में कुतुब मीनार भी एक है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि यह भारत के महत्वपूर्ण स्मारकों में से एक है। 72.5 मीटर ऊंची यह गगनचुंबी इमारत परिष्कृत रूप से गोल, लाल पत्थरों एवं संगमरमर से निर्मित है। धरातल पर इसका परिमाप 13.75 मीटर है जो ऊंचाई पर जाकर 2.75 मीटर रह जाता है।

इस भव्य मीनार का निर्माण कार्य 12वीं शताब्दी में प्रारम्भ हुआ था जब कुतुब-उद्-दीन ने कुतुब मस्जिद योजना का विचार किया था। मगर कुतुब-उद्-दीन की मृत्यु पश्चात उसके दामाद और उत्तराधिकारी इल्तुमिश ने इसके अपूर्े निर्माण कार्य को पूरा करवाया था। भारत की आज तक की पत्थरों से बनी इस सबसे ऊंची मीनार का उपयोग संभवत: प्रारम्भ में मुअ्जीन नमाज की अजान देने के लिए किया करता था। कुतुब शब्द का अर्थ है—स्तंभ जो न्याय और संप्रभुता का प्रतीक है।

प्रारंभ में कुतुब मीनार की चार मंजिलें थीं किन्तु आज इसकी पाँच मंजिलें है जिनमें पहली तीन लाल पत्थर की तथा शेष दो लाल पत्थर और संगमरमर से बनी है। बाहर की तरफ के सजावटी छज्जों से इसकी हर मंजिल अलग दिखाई देती है। इसी प्रकार इसकी प्रथम तीन मंजिलें भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार की हैं। आखिरी मंजिल जो सन् 1368 में फिरोजशाह के काल में क्षतिग्रस्त हो गई थी, उसे उसने दो मंजिलों चौथी एवं पांचवीं में विभक्त कर संगमरमर और लाल पत्थर से बनवाया था।

3. अलाई दरवाजा, कुतुब परिसर

यह सन् 1305 के आसपास निर्मित हुआ था तथा यह अफगान तुर्क के खानदान के तीसरे वंशज खिलजी गांव के रहने वाले अला-उद्-दीन खिलजी ने भवनों की जो योजना बनाई थी, उसके अंतर्गत निर्मित हुआ था। खिलजी सन् 1296 में दिल्ली के शाही तख्त पर बैठा था।

लाल पत्थरों का यह दरवाजा कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद में दक्षिण की तरफ से प्रवेश करने के लिए बनवाया गया था। योजना में यह दरवाजा चौकोर है जिसकी लम्बाई और चौड़ाई अन्दर से 35 फुट है और बाहर से 55 फुट है। दीवारों की जमीन से छत तक की ऊंचाई 47 फुट तथा मोटाई 11 फुट है।

सदियों पुरानी इस मस्जिद का यह शाही दरवाजा पिछली छः शताब्दियों के दौरान थोड़ा सा क्षतिग्रस्त हुआ है। इस प्रवेशद्वार का एक केन्द्रीय कक्ष भी है जो लगभग 16.75 मीटर लंबा है तथा इसका गुंबद लगभग 18.28 मीटर ऊंचा है। इसकी इस दिशा के मध्य में एक प्रवेशद्वार है जिसके दोनों तरफ जालीदार पत्थरों की खिड़कियां या झरोखें हैं। इस प्रकार का हर प्रवेशद्वार एक अंदरूनी कमरे में खुलता है तथा उसकी छत गुंबदाकार है। लाल पत्थर के ये दरवाजे स्वयं में अपने प्रकार के ऐसे पहले निर्माण हैं जिनमें इस्लामी बनावट एवं सजावट का उपयोग किया गया है।

4. ग्यास-उद्-दीन तुगलक का मकबरा

ग्यास-उद्-दीन तुगलक शाह एक शाही तुर्क था तथा सन् 1321 में उसने खिलजी वंश के बाद राजगद्दी संभाली थी। वह कुशल वास्तुकार भी था। उसने दिल्ली में अपनी नई राजधानी बसाई थी। अपनी ऊंची बुजों तथा 13 दरवाजों वाला यह किलेबंद नगर-तुगलकाबाद, दिल्ली का तीसरा शहर था। एक तरह से यह किला ग्यास-उद्-दीन की रचनात्मक शक्तियों का प्रतीक था।

इस अष्टकोणीय किले के दक्षिणी मुख्य प्रवेशद्वार के उस पार लाल पत्थर से बना ग्यास-उद्-दीन का मकबरा है। उसने इस मकबरे को स्वयं बनवाया था। इसकी दीवारों पर यहा-वहां संगमरमर का इस्तेमाल इस किलेनुमा मकबरे को विशिष्ट बना देता है।

सफेद संगमरमर के गुंबद पर लाल पत्थर की चोटी इस उत्कृष्ट मकबरे के गौरव को दर्शाती है। मूलत: यह मकबरा वर्षा के पानी से कृत्रिम विशाल तालाब के बीच बनाया गया था तथा एक पुल के जरिए तुगलकाबाद से जोड़ा गया था। आज इस पुल के बीच से कुतुब-बदरपुर सड़क जाती है।

5. फिरोजशाह कोटला

मोहम्मद बिन तुगलक के उत्तराधिकारी फिरोज शाह तुगलक ने सन् 1354 में यमुना नदी के दाहिनी किनारे पर दिल्ली का पांचवां मध्ययुगीन शहर फिरोजाबाद बनवाया था।

उस काल के बहुत ज्यादा जनसंख्या वाले इस नगर के भग्नावशेष दक्षिण में हौज खास से लेकर उत्तर की हरियाली पट्टी तथा पूर्व में यमुना के किनारे तक फैले है। मुख्य अवशेष यमुना के किनारे पर स्थित कुश्क-ए-फिरोज या फिरोज शाह का महल है। इस महल की एक खास विशेषता ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के लाल बलुवा पत्थर का पालिश किया गया शृंङाकार एकाश्म स्तंभ है, जिसे अशोक स्तंभ के नाम से जाना जाता है। फिरोजशाह अपने महल की शोभा बढ़ाने हेतु इसे अंबाला से लेकर आया था। यह अशोक का दूसरा स्तंभ है तथा इसकी ऊंचाई 13.1 मीटर है। किले की विशाल मोटी दीवारें बड़े-बड़े पत्थरों को गारे से जोड़ कर बनाई गई थीं तथा खुरदरी दीवारों को चिकना बनाने के लिए प्लस्टर किया गया था या पालिश किए गए पत्थर की परत चढ़ाई गई थी।

6. बड़ा गुम्बद, लोदी बाग

इस्लामी बागों और प्रांगणों का स्वयं में अपना ही एक खास आकर्षण होता है। किसी स्थान पर बाग स्थापित करने का अर्थ है कि उस स्थान के महत्व को उजागर करना। इस्लामी साहित्य के गद्य एवं पद्य दोनों में ही बागों की प्रशंसा की जाती रही है और उनकी तुलना स्वर्ग के बाग के साथ होती रही है।

लेडी विलिंगडन पार्क के नाम से भी पहचाने जाने वाले लोदी बाग में—मोहम्मदशाह सैययूद का मकबरा, बड़ा गुंबद, शीश गुंबद तथा सिकंदर शाह लोदी का मकबरा—ये चार ऐतिहासिक महत्व के स्मारक स्थित हैं।

15वीं शताब्दी के अंत में सिकन्दर लोदी के शासनकाल में निर्मित मस्जिद हिंदू-इस्लामी वास्तुकला के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कुछ मकबरों के साथ बनी मस्जिदों में बड़ा गुंबद सबसे प्रारंभिक है। यह बारीक प्लास्टर कार्य के लिए प्रसिद्ध है जो भारत में आज भी विद्यमान है। प्रचुर रूप में अलंकृत कुरान की आयतों से इसकी दीवारों को सजाया गया है। खूबसूरत रंग वाले पत्थर का उपयोग मस्जिद की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

एक विशेष आकार की पांच खुली-चौड़ी मेहराबें जिनकी छत सपाट हैं, मस्जिद में नवीनता का समावेश करती हैं।

7. पुराने किले का दरवाजा

इस स्मारक के भग्नावशेष आज अत्यंत बुरी स्थिति में हैं। पुराने किले का यह दक्षिणी दरवाजा एक प्रकार से मुगल वास्तुकला का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस दरवाजे के दोनों तरफ झरोखें युक्त दो विशाल घुमावदार मीनारें हैं। दरवाजे की मेहराबदार छत के दोनों तरफ काले व लाल पत्थर से बनी दो छतरियां हैं।

यह माना जाता है कि पुराने किले की जगह, हुमायूँ ने यमुना नदी के किनारे पर शहर बनवाया था जो दीन पनाह के नाम से जाना गया। हालांकि शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को पराजित कर सन् 1538 से 1545 तक के अपने शासन काल में इस किले को पूरा करवाया था लेकिन हुमायूँ ने फिर इसे सन् 1555 में जीत लिया था।

दरवाजे की ऊंची दीवारों पर उत्कीर्ण हाथियों की दो सफेद आकृतियां यह प्रमाणित करती हैं कि उनकी प्रेरणा उसे हिंदू वास्तु शैली से मिली होगी क्योंकि हुमायूँ के काल के सभी भवनों की मूल संकल्पना फारसी शैली की है।

8. शेर मंडल

यह अष्टकोणीय तथा लाल बलुवा पत्थर से बना भवन दिल्ली स्थित पुराने किले के दक्षिण की तरफ दरवाजे के अंदर स्थित है। भारत में मुगल काल के दौरान

एक योग्य शासक शेरशाह सूरी ने इसे बनवाया था। पुराने किले का स्थान दिल्ली का मूल नगर इंद्रप्रस्थ माना जाता है।

शेरशाह सूरी ने संभवत: सोलहवीं शताब्दी में हुमायूँ को हराने के बाद पुराने किले के अंदर इस इमारत को बनवाया था। शेरशाह के पांच साल के शासन में देश में काफी सरकारी और प्रशासनिक सुधार हुआ था। उसका खजाना और सरकारी मशीनरी सब पुराने किले में स्थित था।

किले की दीवारें अत्यंत विशाल हैं तथा लाल पतथर से निर्मित तीन बड़े दरवाजों को सफेद संगमरमर के जड़ाऊ कार्य तथा रंगीन पत्थरों के समतल टुकड़ों से सजाया गया है। इन दरवाजों की डिजाइन ने भवन निर्माण की कलात्मक अलंकरण शैली की शुरुआत की। यह उस काल की स्थापत्य कला के विकास की एक विशेषता थी।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि बाद में हुमायूँ ने शेर मंडल का इस्तेमाल एक पुस्तकालय के रूप में किया था। इतिहास में यह भी वर्णित है कि इस इमारत की सीढ़ियों में फिसलकर हुमायूँ की मृत्यु हो गई थी।

9. हुमायूँ का मकबरा

भारत पर 16वीं शताब्दी में शासन करने वाला हुमायूँ दूसरा मुगल बादशाह था। चित्र में दिखाए गए विशाल मकबरे का निर्माण हुमायूँ की मृत्यु के लगभग 8 वर्ष पश्चात् उसकी बेगम-बेगा (जिसका प्रचलित नाम हाजी बेगम था) ने करवाया था।

राजधानी के प्रसिद्ध मार्ग मथुरा रोड पर स्थित यह मकबरा पत्थरों के जड़ाऊ कार्य की उस कला का पहला दर्शन कराता है जो कि लगभग एक शताब्दी पश्चात् ताजमहल की सजावट में भी दृष्टिगोचर होती है।

अहाते के बीच में बहुत ऊंचा मकबरा है। यह एक ऊंचे मंच पर बना हुआ है। बीच के अष्टकोणीय कमरे में नकली कब्र है और इसके चारों तरफ जाली वाले कमरे और मेहराबों वाले बरामदे हैं। कमरे के चारों तरफ तीन मेहराबें हैं जिनमें बीच वाली मेहराब सबसे बड़ी है। इसी नक्शे को दूसरी मंजिल पर भी दोहराया गया है।

यह विशाल भवन लाल पत्थरों से बना है, इसके किनारों पर काला और सफेद संगमरमर लगा हुआ है। भारतीय वास्तुकला में दोहरे गुंबद वाली संभवत: प्रथम इमारतों में से एक है। आंतरिक गुंबद मकबरे के कमरों की मेहराबदार छत है तो बाहरी गुंबद इसे बाह्य भव्यता प्रदान करता है। हुमायूँ की बेगम को भी यहीं दफनाया गया है।

10. लाहौरी दरवाजा

दिल्ली के प्रसिद्ध लाल किले की लाल पत्थरों से बनी यह विशाल इमारत सन् 1648 में शाहजहां ने बनवाई थी। इसका भव्य दरवाजा लाहौरी दरवाजा कहलाता है जिसे आप इस चित्र में देख रहे हैं। यह दरवाजा प्रसिद्ध शहर लाहौर के मुखातिब है जो कि अब पाकिस्तान में है।

लाहौरी दरवाजा इस तरह से बना हुआ था कि जब बादशाह अपने सिंहासन पर दीवान-ए-आम में बैठते थे तो वह प्रसिद्ध चांदनी चौक बाजार का पूरा नजारा देख सकते थे। बाद में औरंगजेब ने उस दरवाजे को बंद करवा कर उसके दांयी तरफ एक नया दरवाजा बनवा दिया था। लाहौरी दरवाजे के अन्दर के रास्ते में दोनों तरफ बाजार आता है जिसे मीना बाजार कहा जाता है। यह बाजार एक समय में राजघराने की स्त्रियों के लिए था।

आज भी हर साल “स्वतंत्रता दिवस” के अवसर पर लाहौरी दरवाजे के सामने लाल किले की प्राचीर पर राष्ट्रीय झंडा फहराया जाता है। इसका डिजाइन बड़ा ही सुरुचिपूर्ण है। दरवाजे के ऊपर की छतरियां बड़ी ही भव्य हैं। यह अत्यधिक लंबा-चौड़ा है तथा इसकी निर्मित सजावट अत्यंत मोहक है।

लाहौरी दरवाजे के अतिरिक्त लाल किले में एक और तीन मंजिला दरवाजा है, जिसे दिल्ली दरवाजा कहा जाता है। अर्ध अष्टभुज मीनारों से बने दिल्ली दरवाजे में कई कक्ष हैं जिनके बाहर दो हाथियों की मूर्तियां बनी हुई हैं।

11. दीवान-ए-आम

बादशाह शाहजहाँ इस हाल का प्रयोग आम जनता की फरियादों को सुनने के लिए किया करते थे। आप दीवान-ए-आम की पेचीदा नक्काशी से बने छज्जों की अद्भुत सुन्दरता को सराहे बिना नहीं रह पायेंगे। इसे एक ऊंचे चौक पर बनाया गया है जो तीन दिशाओं से खुला है।

इस हाल में चबूतरे पर संगमरमर का बना हुआ सिंहासन है, जिसमें कीमती पत्थर जड़े हुए थे जो कि सन् 1739 में नादिरशाह तथा बाद के शासकों ने निकाल लिए। बाद में लॉर्ड कर्जन ने इसे काफी ठीक-ठाक करवा दिया था। इस हाल की सपाट छत लाल पत्थर की मेहराबों पर टिकी है। पीछे की तरफ संगमरमर से बनी छतरी के नीचे बादशाह का सिंहासन था, जहां वह आम जनता से मिलते थे।

छतरीनुमा छत की दीवारें रंगबिरंगे पत्थरों से जड़ी हुई हैं जो तरह-तरह के फूलों और पक्षियों के चित्रों को दर्शाती हैं। बादशाह के सिंहासन के पीछे छत के नीचे वाले हिस्से में ग्रीस के देवता आरफियस को साज बजाते दिखाया गया है। आज भी दीवान-ए-आम, मुगलों और हिंदुओं की वास्तुकला के सम्मिश्रण का शानदार प्रमाण है।

12. दीवान-ए-खास

लाल किले में प्रसिद्ध दीवान-ए-खास, में राजसी दरबार था जहां बादशाह शाहजहाँ खास दरबारियों और मेहमानों से मिलते थे।

यह कक्ष (हॉल) अनूठा है और महल में स्थित सभी मंडपों से अलग ही नजर आता है। यह विशाल आयताकार कक्ष 27.4 मी. × 20.4 मी. है और पूर्णतः सफेद संगमरमर से निर्मित है। बड़े आयताकार हाल के तीन तरफ प्रभावशाली खुली हुई मेहराबें हैं। चौथी तरफ दीवार और खिड़कियों के बीच जाली बनी हुई है। इसके बीच में स्तम्भों पर मेहराबों से बना एक कक्ष है। स्तम्भों के निचले हिस्से में रंगीन पत्थरों से फूल खुदे हुए हैं जबकि ऊपरी भाग में रंग किया हुआ है। दीवान-ए-खास के चारों कोनों में चार स्तम्भ छतरी नुमा बने हुए हैं।

यह हाल खूबसूरत मोर सिंहासन तख्त-ए-ताऊस के लिए विख्यात है जो कि इसके बीच में संगमरमर के मंच पर रखा हुआ था। यह सिंहासन सोने का बना हुआ था जिसमें मोर पंख बने हुए थे और अनगिनत कौमती पत्थर जड़े हुए थे। मोर के बीच में अकेले पन्ने से तराशा हुआ तोता था। इस सिंहासन को नादिरशाह सन् 1739 में ईरान ले गया था। इसके बीच में नहर-ए-बहिशत बहती थी।

13. जामा मस्जिद

मुगलों द्वारा दिल्ली में बनाई गई आखिरी इमारतों में शाहजहाँ द्वारा बनवायी गई जामा-मस्जिद भी है जो कि भारत की सबसे बड़ी मस्जिद है। मशहूर लाल किले के सामने बनी यह प्रभावशाली इमारत सोलहवीं शताब्दी मध्य की मुगल कला का एक शानदार नमूना है।

यह मस्जिद पाँच हजार मजदूरों और कारीगरों द्वारा छः साल में बन कर तैयार हुई। इस इबादत के स्थान में 400 वर्ग मीटर का प्रांगण है जिसमें सीढ़ियों के द्वारा पहुँचा जा सकता है। पूर्वी द्वार से लगा गलियारा पहले शाही खानदान के लिए आरक्षित था, जिसमें प्रत्येक के लिए एक संगमरमर का पत्थर लगा हुआ था। नीले, लाल रंग के चौकोर पत्थरलगे हुए हैं जो कि आम आदमियों के लिए है। मस्जिद में बड़े-बड़े द्वार, स्तंभ और मेहराब होने के साथ संगमरमर के बने गुम्बद और छतरियां हैं। प्रांगण, स्तंभ वाली दीवारों से घिरा हुआ है और उसके कोने में गुंबद वाला मण्डप है। पश्चिम में आयताकार इबादत की जगह 6.1 मी. × 27.5 मी. की है जो कि ग्यारह नक्काशी किये हुए मेहराबों से घिरी है। इसके ऊपर खुदाई किये हुए सफेद और काले संगमरमर के पत्थर लगे हुए हैं। अग्रभाग के कोनों पर स्थित दो मिनारों की ऊंचाई 130 फीट है।

इसके मुख्य हाल के ऊपर सफेद और काले संगमरमर से बने तीन खूबसूरत गुम्बद हैं जो कि शाहजहां के समय की वास्तुकला की विशेषता है। यहां पर विशेष धार्मिक अवसरों पर सामूहिक इबादत होती है।

14. राष्ट्रपति भवन

राष्ट्रपति भवन भारत के महामहिम राष्ट्रपति का सरकारी निवास है। इसे दो मशहूर अंग्रेजों, सर एडविन लुचियंश और सर हरबर्ट बेकर द्वारा बनाया गया था। राष्ट्रपति भवन की प्रभावशाली इमारत, इसके विशाल आकार और 330 एकड़ जमीन की सुन्दर उपयोगिता के लिए मशहूर है। इस इमारत में इंग्लैंड, ग्रीस, रोम, भारत एवं अन्य देशों की वास्तुकला का सुन्दर सम्मिश्रण देखने को मिलता है। वह ज्यादातर रोमन वास्तुकला पर आधारित है। रायसीना की पहाड़ी पर बना यह भवन पहली बार सन् 1929 में निवास के लिए उपयोग में लाया गया।

इस भवन में पूर्व की तरफ से सीढ़ियों पर चढ़ने के बाद ही मण्डप में पहुंचा जा सकता है। इसका दरबार हाल अत्यंत प्रभावशाली है जिसका गुम्बद बौद्ध स्तूप से मिलता है। इसमें कई राजसी दरबार और कमरे हैं। दरबार हाल और अशोक हाल अनेक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समारोहों और सभाओं का स्थान है। इस भवन में कुल 340 कमरे हैं।

राष्ट्रपति भवन के बाहर पत्थर का बना जयपुरी स्तंभ है जिसे महाराजा जयपुर ने बनवाया था।

राष्ट्रपति भवन के पश्चिम में प्रसिद्ध मुगलबाग अपने शानदार पेड़-पौधों के संग्रह के लिए मशहूर है।

15. इंडिया गेट

यदि आप केन्द्रीय सचिवालय से राजपथ पर चलें तो आप बहुत ऊँची मेहराबों से बनी इंडिया गेट की इमारत को देखेंगे। इस 42 मी. ऊंची स्लेटी रंग की इमारत का वास्तविक नाम आल इंडिया वार मेमोरियल है। इसे प्रथम विश्वयुद्ध में शहीद हुए भारतीय सेना के 70,000 जवानों की याद में बनाया गया था। 10, फरवरी 1921 को ड्यूक ऑफ कनाट ने इंडिया गेट की नींव डाली थी।

इसके मेहराबदार दरवाजे पर शहीदों के नाम खुदे हुए हैं, जिससे कि सारा संसार उन अमर आत्माओं को याद कर सके जिन्होंने अपना जीवन बलिदान कर देश की रक्षा की थी।

इस दरवाजे पर बनी सीढ़ियां ऊपर छत तक जाती हैं। किसी समय में इसे फोटोग्राफी और आगुन्तकों के देखने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। परन्तु अब इन सीढ़ियों को आम आदमियों के चढ़ने के लिए बंद कर दिया गया है।

इस दरवाजे के बीच में एक अमर जवान ज्योति जल रही है और इसके बीचों-बीच उल्टी बन्दूक के ऊपरी हिस्से में एक हेलमेट रखा है जो कि अमर जवानों की याद दिलाता है।

16. जंतर-मंतर

संसद मार्ग से कर्नाट प्लेस की ओर चलने पर कुछ ही दूरी पर स्थित है—महाराजा जय सिंह द्वितीय की वेधशाला , जिसमें गुलाबी आभा लिए अनेक विचित्र निर्माण स्थित हैं। राजा जयसिंह द्वितीय की खगोलशास्त्र के प्रति ललक इतनी अधिक थी कि उन्होंने इस वेधशाला के निर्माण से पहले अपने विद्वानों को विदेशों में भेजा था ताकि वे विदेशी वेधशालाओं के बारे में अध्ययन कर सकें। सन् 1725 में इस वेधशाला का निर्माण हुआ था और इस वेधशाला का प्रमुख आकर्षण स्थल सूर्य घड़ी है, जिसे ‘धूप घड़ियों के राजकुमार’ के नाम से भी जाना जाता है।

जंतर-मंतर पहली नजर में विचित्र ढांचों का सिर्फ एक समूह सा लगता है पर वास्तव में हर निर्माण का अपना एक विशेष उद्देश्य है, जैसे कि सितारों की सही स्थिति को जानना या ग्रहणों की गणना करना। राजा जयसिंह ने जयपुर, वाराणसी तथा उज्जैन में भी वेधशालाएं बनवाई थी। मथुरा स्थित पांचवी वेधशाला अब नहीं है।

17. संसद भवन

राजधानी के बीच में बनी बहुत प्रभावशाली इमारतों में एक गोलाकार स्तम्भों से बनी इमारत है, जो कि भारतीय संसद के नाम से प्रसिद्ध है। इसे सर एडविन लुचियंस की योजना पर सन् 1927 में बनाया गया। यह केन्द्रीय सचिवालय के चित्रोपम परिसर में स्थित है तथा इसका व्यास 171 मी. चौड़ा है।

लाल पत्थर से बनी इस प्रभावशाली इमारत का बाहर का बरामदा गोलाकार स्तम्भों से घिरा है। तीन मंजिलों की यह इमारत भारत की कानून बनाने की सर्वोच्च संस्था है जिसमें संसद के दोनों सदनों, राज्य सभा और लोक सभा की बैठकें होती हैं।

अन्दर का भाग भी बहुत अच्छे तरीके से बना है। इसके मध्य में एक सभागृह है जो कि पेचीदा नक्काशी से बने गुम्बद से ढका हुआ है। मध्य सभागृह आसपास के तीन बड़े हालों से घिरा है जो कि लोक सभा, राज्य सभा और संसद पुस्तकालय है। इन सभागृहों के साथ का स्थान फव्वारों और पार्क से सजा है जो इस इमारत को बहुत वैभवशाली बनाता है।

इसमें करीब 500 कमरे हैं जिसमें संसद सचिवालय, प्रधानमंत्री का कार्यालय, बैंक, डाकघर, रेलवे आरक्षण के ऑफिस हैं।

राष्ट्रीय झंडा इस इमारत पर बड़े गर्व से लहराता है और भारतीय लोकतंत्र का महत्व दर्शाता है कि सरकार जनता की, जनता के लिए और जनता द्वारा बनाई गई है।

18. कर्नाट प्लेस

राजधानी के मुख्य बाजार कर्नाट प्लेस को अंग्रेजी राज के समय वायसराय ने विशेष व्यक्तियों के लिए बनवाया था। इसका नामकरण सन् 1921 में कर्नाट के ड्यूक की भारत यात्रा की याद में रखा गया है। इसकी सफेद और गोल स्तम्भों वाली गोल इमारतों को सर एडविन लुचियंस ने राष्ट्रपति भवन और इंडिया गेट के साथ ही बनवाया था। यह खूबसूरत बाजार जिस समय बना था, तब छः खण्ड अन्दर के थे जिन्हें कर्नाट प्लेस कहा जाता था और छः खण्ड बाहर के थे जिन्हें कर्नाट सरकस कहा जाता था। दोनों में ही स्तम्भ वाले बरामदे हैं।

बीसवीं शताब्दी के मध्य में जब नई दिल्ली का शहर बन रहा था तब अमेरिकन एक्सप्रेस खण्ड, जिसे सुजान सिंह खंड कहा जाता था, बनाया गया। बाद में सन् 1932 में सिंधिया हाऊस, जनपथ और चलचित्रगृह रीगल सरदार शोभा सिंह के द्वारा बनवाये गये।

छठे दशक में इसकी खूबसूरती को बढ़ाने के लिए बीच में एक फव्वारा बनवाया गया जो कि कमल के फूल की बनावट का है। हाल ही में जमीन के नीचे का पालिका बाजार और कार पार्क भी बनवाये गये हैं। जनपथ से कनाटप्लेस तक बगल में ईस्टर्न एवं वेस्टर्न कोर्ट हैं जिन्हें राबर्ट रसैल ने स्तंभाकार टस्कन बरामदों वाले प्रतिष्ठित भवनों की उत्कृष्ट जोड़ी के रूप में डिजाइन किया था।

19. गुरुद्वारा बंगला साहिब

गोल डाकखाने के पास बहुत बड़े स्थान में बना गुरुद्वारा बंगला साहिब दिल्ली में सिख समुदाय का प्रमुख धार्मिक स्थल है। सफेद संगमरमर से बनी यह शानदार इमारत, इस्लामी और भारतीय वास्तुकला का सम्मिश्रण है। सामने की दीवार गुम्बददार छज्जों से सजी हुई है। बीच की गुम्बद पर सोने का पानी चढ़ा हुआ है जिससे यह गुरुद्वारा राजधानी की एक शानदार इमारतों में से एक बन गया है।

इतिहास के अनुसार 17वीं शताब्दी में यह गुरुद्वारा राजा जयसिंह का बंगला था जिनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था। यह कहा जाता है कि राजा ने एक बार सिखों के आठवें गुरु श्री हरकिशन साहिब को अपने बंगले पर बुलाया था। उस समय दिल्ली में चेचक की महामारी फैली हुई थी, गुरु ने इस बीमारी का इलाज बंगले के प्रांगण में, जहां वह ठहरे थे, वहाँ एक तालाब को खोदकर पाया। तालाब के उस पवित्र जल से चेचक का प्रकोप कम हो गया।

आज भी यह माना जाता है कि सरोवर का पवित्र जल अमृत के समान है व उसमें रोगियों को स्वस्थ करने की शक्ति है।

20. हनुमान मंदिर

राजधानी के व्यस्त व्यावसायिक केन्द्र बाबा खड़ग सिंह मार्ग पर यह पावन हिन्दू मन्दिर स्थित है। माना जाता है कि यह मन्दिर 18वीं शताब्दी में राजा जयसिंह ने बनवाया था। मन्दिर के अन्दर का हिस्सा सफेद संगमरमर का बना हुआ है तथा प्रांगण में आधी दीवार की ऊंचाई तक शुद्ध चांदी की मूर्तियां बनी हुई हैं। सन् 1964 में इसके बाहर के हिस्से की मरम्मत की गयी थी। राम, लक्ष्मण और सीता की अन्य मूर्तियां भी चांदी से अलंकृत हैं।

प्रमुख भगवान हनुमान की श्रदेय पूर्ति के संबंध में यह माना जाता है कि भगवान हनुमान की विशाल मूर्ति मध्यकालीन है। मन्दिर में उमड़ती हुई भीड़ इस लोकप्रिय धार्मिक धारणा को मानती है कि मंदिर “सिद्ध-पीठ” है (इस जगह पर सब की इच्छा पूर्ण होती है)।

अब इसकी चारों तरफ की दुकानों ने इस मन्दिर की मौलिक वास्तुकला की खूबसूरती को समाप्त कर दिया है। हर मंगलवार को इस मन्दिर के आसपास साप्ताहिक बाजार लगता है जिसमें बहुत ही भीड़ होती है।

21. बहाई का पूजा स्थल

दक्षिण दिल्ली में बना कमल के फूल के आकार का बहाई धर्म का “मातृ-मन्दिर” आज के समय की वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। यह मंदिर बहाई धर्म के संसार के सात पूजा स्थलों में एक है।

यह विशाल इमारत आधे खुले कमल के फूल की तरह बनाई गई है। कमल, जो की पूजा, सृष्टि, प्राकृतिक खूबसूरती व पवित्रता का चिन्ह है—इसकी नौ फूल पंखुड़ियाँ चमकते हुए सफेद संगमरमर की बनी हैं। बाहर की नौ पत्तियां अंदर जाने वाले नौ दरवाजों पर छतरी बनाती हैं। सभा भवन के अन्दर का फर्श—जहां पर प्रत्येक धर्म के लोग आ कर अपनी पूजा कर सकते हैं—सफेद चिकने संगमरमर का बना है। मंदिर के चारों तरफ पैदल पथ पर सीढ़ियां हैं जो कि नौ तालाबों के इर्द-गिर्द हैं तथा पानी में तैरते कमल दलों की प्रतीक हैं। यह नौ तालाब इमारत को ठंडा रखने में भी सहयोग देते हैं।

सफेद पत्तियों के लिए डोलेमाईट दिल्ली के निकट अलवर से, रेत जयपुर से तथा सफेद सीमेंट कोरिया से आयात की गई थी। ग्रीस में पेंटीलीकोन पहाड़ की खानों से संगमरमर को निकाला गया था, जिसे भेजकर कंप्यूटर के द्वारा नियमित आकार का कटवाया गया, बाद में इसे भारत में आयात करा गया।

इस का निर्माण बहाई धर्म के उपसक तथा वास्तुकार फरिखुर्ज साहब द्वारा दस करोड़ रुपयों की लागत से दस वर्ष में करवाया गया था।

22. कैथीड्रल गिरजाघर

यदि आप राजधानी में राष्ट्रपति भवन के नीचे सड़क पर जायें तो आप कैथीड्रल चर्च ऑफ दि रिडेमशॅन (उद्धार के लिए बना गिरजाघर) की खूबसूरत इमारत को देखेंगे। यह गिरजाघर लगभग 63 साल पुराना है।

इस गिरजाघर के बनाने का विचार तब आया जब मान्यवर टी.आर. डिक्सन, भारत की नयी राजधानी में चेपलिन बनकर आये। वास्तुकार एच.ए.एन. मेड्डू ने सर एडविन लुचियंस—जिन्होंने नई दिल्ली शहर की योजना बनाई थी—के साथ विचार विमर्श करके इसे बनवाया था। लॉर्ड इरविन जब वायसराय बन कर भारत आये तो इसके निर्माण का कार्य बहुत तेजी से आरम्भ हुआ और उन्होंने खुद 23 फरवरी, 1927 को इसका शिलान्यास किया। “कैथीड्रल ऑफ दि रिडेमॅशन” 18 जनवरी, 1931 को जनसमूह के लिए खोला गया था।

गिरजाघर की इमारत सफेद रंग और लाल रंग के धौलपुरी पत्थरों से बनी है। इसकी मेहराबदार छत को छोड़कर इयोदी और भीतरी भाग सफेद पत्थरों से बने हुए हैं।

15 सितम्बर, 1965 को भारत के राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इस गिरजाघर के पारिश हाल का उद्घाटन किया था।

15 सितम्बर, 1965 को भारत के राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इस गिरजाघर के पारिश हाल का उद्घाटन किया था।

Architecture of Delhi

1. The Iron Pillar

The 7.20 m high Iron Pillar, in the Qutub complex is not quite as simple as it looks. Cast from iron of exceptional purity, the unique pillar has not shown any sign of rusting in roughly 1500 years of its existence.

The Iron Pillar originally built in the 5th century A.D. was transported from Mathura to Delhi in the 12th century A.D. The diameter at its base is 6 ft. 4 in. and tapers to 2 ft. 4 in. at the top.

The building of the Quwwat-ul-Islam mosque in the courtyard of which stands the famous iron pillar is, a wonderful monument to the scientific knowledge and skill of Hindu craftsmen. It was commenced by the first Delhi Sultan Mohd. Ghorī in about 1196 A.D.; the arches seen in front of the Iron Pillar containing the pulpit were added by his successor Qutub-ud-Din about ten years later. Iltutmish who succeeded in 1210 A.D., began to enlarge the mosque by extending the sanctuary with screens in north and south and by adding a great quadrangle which should have enclosed the original building.

History offers several interpretations to the origin of the Iron Pillar. A Gupta inscription on the pillar records that it was originally a *Vishnudhwaja* set up in memory of King Chandra. The flat, square, towering end of the majestic pillar bears a hole indicating that an image of *Garuda* (The mount of Vishnu) originally decorated the tower.

Interestingly, there goes a belief that if one secretly wishes for something after encircling his arms, around the pillar (with his back to the pillar) his wish will be fulfilled.

2. Qutub Minar

The Qutub Minar is an outstanding landmark in India's architectural achievements. Undoubtedly, it is one of the most impressive monuments in the country. Dominating the skyline at a height of 72.5 m, this elegantly circular, sandstone structure has a base of 13.75 m diameter which tapers to a mere 2.75 m at the apex.

The origin of the imposing Minar can be traced to the end of the 12th century when Qutub-ud-Din conceived it as a part of the Qutub Mosque scheme. However, it was eventually completed by his son-in-law and successor Iltutmish. The highest stone tower in India till today, the Qutub Minar also served as the Minar of the mosque from where the Muezzin made his daily call to the worshippers to come to pray. The word, 'Qutub' signifies a pole, the very pivot of justice and sovereignty.

As originally completed the Qutub comprised four storeys but today it has five storeys, the first three in red sandstone and others in marble and sandstone, with each storey clearly distinguishable from outside by decorative balconies. The first three storeys are each designed on a different plan. The fourth storey is simply round. The uppermost storey which was damaged in 1368 A.D. during Firoz Shah's reign, was replaced by him by two storeys made of marble and sandstone.

3. Alai Darwaza, Qutub Complex

Built around 1305 A.D. the Alai-Darwaza was undertaken as part of the building project of Alaud-Din-Khalji—the third in line in the dynasty of Afghan Turks from the village of Khalji—who ascended the throne of Delhi in 1296 A.D. The sandstone gateway was erected to serve as the southern entrance to the Quwwat-ul-Islam mosque. The planning of the gateway is a square measuring 35 feet internally and 55 feet externally. The height of the walls is 47 feet from the floor to the ceiling having a thickness of 11 feet.

The stately entrance to the courtyard of the age old mosque has suffered little damage in the last six centuries. The gatehouse has a main central hall—a cubical structure of 16.76 m side with a 18.28 m high dome. In the middle of each side is a doorway flanked by a perforated stone window. Each doorway opens into a single inner room with a domed ceiling. The distinctive surface design and the original conception of the dome of the Alai Darwaza (gateway of Alaud-Din) are its unique features.

The sandstone gateway is the first building of its kind to be found in India employing Islamic principles of construction and ornamentation.

4. Tomb of Ghiyas-ud-Din Tughlaq

Ghiyas-ud-Din Tughlaq Shah, was a Turk nobleman who succeeded the Khaljis in 1321 A.D. The ruler of the Tughlaq dynasty, a keen architect, he added a new capital city in Delhi. The fortified town of Tughlaqabad, with high bastions and 13 gateways, the third city of Delhi, was the creative genius of Ghiyas-ud-Din Tughlaq.

Across the main entrance to the south of the octagonal fort is the red sandstone tomb of Ghiyas-ud-Din himself. The most striking part of its composition is the determined slope of the outer walls, as these are inclined at an angle of seventy-five degrees, suggesting the converging sides of a pyramid. Its square base is sixty-one feet wide and the entire height of the structure including its sandstone finial is over eighty feet. A restrained use of marble on the walls of the self-built tomb gives this fortress like structure a distinguished look.

A white marble dome with a circular sandstone marks the crowning glory of this exquisite tomb. Originally, the tomb was built within a vast artificial reservoir of rain water and was also connected to Tughlaqabad by a cause-way. The Qutub-Badarpur road now runs through the cause-way.

5. Firoz Shah Kotla

Firoz Shah Tughlaq, who succeeded Mohammad-bin-Tughlaq constructed the fifth medieval city of Delhi called Firozabad on the right bank of the river Yamuna in 1354 A.D.

The principal ruins of this once populous city extended from Hauz Khas in the south, to the ridge in the north and the river Yamuna in the east. One of the principal ruins of this period is the Kushik-I-Firoz or palace of Firoz on the banks of river Yamuna. The most distinctive feature of this palace is a monolithic tapering column of polished sandstone from the 3rd century B.C. This structure known as the Ashoka Column was brought by Firoz Shah from Ambala to grace his newly built palace. It is the second column of Ashoka measuring 13.1 m in height.

The massive thick walls of the fort were built with closely packed blocks of stones joint together with mortar, the rough walls were coated with plaster or covered by a layer of polished stone to give its wall a smooth finish.

6. Bara Gumbad, Lodi Garden

Islamic gardens and courtyards have a special charm and attraction of their own. The establishment of a garden meant an opportunity to reveal the essence of a site. In Islamic literature, both in poetry and prose, the garden is lavishly praised and compared to the garden of Paradise.

In the Lodi Gardens, also known as Lady Wellington Park, there are four buildings of historical importance. The tomb of Mohammad Shah Saiyyed, Bara Gumbad, Shish Gumbad and the tomb of Sikandar Lodi.

Built towards the close of the 15th century A.D. during the reign of Sikandar Lodi, the mosque occupies a significant place in the development of Indo-Islamic architecture. Bara Gumbad is the earliest among mosque building attached to some of the tombs. It has the distinction of possessing the finest plaster work that survives in India today. On the outer walls of the prayer hall, we can see elaborate scrolls, decorations and inscriptions in Arabic. Beautiful coloured tile work is one of the notable features of the mosque. Five wide open arches with a flat top add an innovative touch to the mosque.

7. Purana Quila Gate

In a sad state of ruins today, this southern entrance to the Purana Quila bears evidence to the elegant architectural style of the Mughals. The gate is flanked by the remains of two huge circular towers with window openings. The arched roof of the gate is covered by an open pedestal with two *chhatris* on either side, made of black and red stone. Humayun is believed to have rebuilt the city at the present site of the Purana Quila, which came to be known as Din Panah. Later, Sher Shah Suri who defeated Humayun, completed the fort during his rule from 1538-1545 A.D., before Humayun once again regained his throne in 1555 A.D.

The two white elephant sculptures engraved on the high gate walls may have been inspired by Hindu architectural styles, though buildings of Humayun's period are basically Persian in concept.

8. Sher Mandal

The octagonal red sandstone tower of Sher Mandal stands at the entrance of the southern part of the famous Purana Quila in New Delhi. Built by Sher Shah, one of the most able rulers of India during the Mughal period, the location of Purana Quila is supposed to be the site of Indraprastha—the original city of Delhi.

Sher Shah built part of the old fort in the 16th century A.D. after defeating Humayun. During Sher Shah's five year reign, there was much improvement in the Government and administrative system of the country. His residence, treasury and seat of government were all located in the Purana Quila.

The fort has massive walls and three large sandstone gateways decorated with white marble inlay and coloured tiles. The design of these gateways formed the beginning of a more artistic ornamental type of building construction—an important architectural development of the times.

The Sher Mandal is later believed to have been used by Humayun as his library. History also records that the Mughal king fell to his death from the stairs of this very building.

9. Humayun's Tomb

Humayun was the second Mughal Emperor to rule India in the 16th century A.D. The lofty tomb of Humayun you see in the picture was built by Bega Begam, Humayun's widow, (popularly known as Haji Begum), eight years after his death.

Standing on the capital's famous Mathura road, the Humayun's Tomb offers the first indications of the development of the art of stone inlay which culminated nearly a century later in the exquisite decorations of the Taj Mahal at Agra.

The lofty mausoleum is located at the centre of the enclosure. It rises from a podium faced by a series of arched openings. The central octagonal chamber houses the cenotaph (false tomb) and is encompassed by chambers and arched lobbies with perforated screens. Each side of the chamber is dominated by three arches, the central one being the highest. This plan is repeated on the second storey. For the first time, double domes appear in Indian architecture, the inner shell forming the vaulted ceiling to the tomb chambers and the outer shell creating a majestic external impact.

10. Lahori Darwaza

The famous Red Fort in Delhi is an imposing red sandstone structure built by Shahjahan in 1648 A.D. It has a magnificent entrance known as the Lahori Gate, which you see in the picture. This gate is believed to be facing the city of Lahore, now in Pakistan.

The Lahori Darwaza was situated at a point from where Emperor Shahjahan could get a full view of the famous bazar of Chandni Chowk, even as he sat on his throne at the Diwan-i-Am. However, Aurangzeb blocked the gate with a wall and made another gate on its right side. The Lahori Gate leads to a roofed passage with an arcaded shopping centre on either side called Meena Bazar. This was once the shopping centre for the women of the royal household.

The Lahori Darwaza has been tastefully designed. The *chhatris* on the superstructure are very impressive. Its ornamentation which is largely structural is extremely pleasing. The ramparts above the Lahori Gate are now used for the flag hoisting ceremony on Independence Day, every year.

Besides the main Lahori Gate, the fort has another imposing, three-storeyed gateway called the Delhi Gate. Flanked by semi-octagonal towers consisting of several apartments, the Delhi Gate has two elephant statues on the outside.

11. Diwan-i-Am

Diwan-i-Am is said to have been utilised as the 'hall of public audiences', by Emperor Shahjahan, to hear complaints and disputes of his subjects. Diwan-i-Am is known for its intricate carvings. It is built on a raised plinth and is open on three sides.

The Emperor's throne is placed at the raised recess of the back wall. The throne platform is marble panelled which was engraved with precious stones. In 1739 A.D., these precious stones were removed by Nadir Shah and later rulers. Lord Curzon, however, is said to have restored back much of its grandeur. The hall has a flat

roof raised on sandstone arches. Under the marble canopy on the rear side stood the Emperor’s throne from where he received the general public.

The walls of the canopied hall are panelled with multicoloured stone inlay work depicting flowers and birds. On the ceiling of the central panel can be seen the figure of the Greek God Orpheus with his flute. Till this day, the Diwan-i-Am bears standing testimony to the rich blend of Mughal and Hindu architecture in India.

12. Diwan-i-Khas

The luxurious royal chamber where Emperor Shahjahan gave private audience to a selected set of courtiers and visitors, at the Red Fort is well-known as Diwan-i-Khas.

The hall is exclusive and stands out of all the pavilions in the palace. The large rectangular hall measures 27.4 m by 20.4 m and is built entirely of white marble. It has elegant open arches on three sides. The fourth side has window openings in between *jali* wall panels. There is also a central chamber surrounded by aisles of arches rising from *piers*. The lower parts of the *piers* are inlaid with floral designs while the upper portions are gilded and painted. Four pillared *chhatris* decorate the ceiling of the Diwan-i-Khas.

The hall was renowned for the magnificent Peacock throne which stood over the marble pedestal at the centre. The throne made of solid gold was engraved with peacock figurines shimmering with countless precious stones. In between the peacock figures was a parrot carved out of a single emerald. The stone studded master-piece was, however, removed to Iran by Nadir Shah in 1739 A.D. The royal palace also had the *Nahir-i-Bihist*—flowing through the central parts.

13. Jama Masjid

The largest mosque in India, Jama Masjid was the last of the buildings constructed by Emperor Shahjahan in the mid 16th century A.D. Built in a course of six years, by about 5,000 workmen, this ancient place of worship has a vast courtyard of 400 sq. m. which is reached by a flight of stairs. The gallery within the east gateway was once reserved for royalty. Below, the square sandstone slabs were meant for the commoners. The courtyard in the mosque is enclosed by pillared corridors with domed pavilions at the corner. The rectangular prayer-hall on the west measures 6.1 m by 27.5 m, enclosed by 11 engraved arches. Inscriptional panels in white and black marble run above the arches.

The two minars at the corners of the facade are 130 feet high.

The hall is surmounted by three shapely domes decorated with alternate stripes of black and white marble—a new feature of Shahjahan’s architecture. Mass prayers are held here on Muslim religious occasions.

14. Rashtrapati Bhawan

Rashtrapati Bhawan is the official residence of the President of India. It was designed by the two famous British architects, Edwin Lutyens and Herbert Baker. This impressive building is known for its imposing size and aesthetic use of 330 acres of land. It is essentially built in neo-Roman style but incorporates Indian elements like Buddhist railings, Islamic pavilions and Hindu brackets. Built on the Raisina Hill, the Bhawan was first occupied in 1929 A.D.

The Rashtrapati Bhawan can be entered from the east gate by a wide flight of steps leading to the portico. The magnificent Darbar Hall has a spectacular dome, the replica of a Buddhist stupa. It has stately courts and spacious state rooms. The Darbar Hall and the Ashoka Hall have been the venues of many assemblies and ceremonies of national and international significance. The entire complex contains 340 rooms.

Outside the Rashtrapati Bhawan gates, stands the famous Jaipur column—a stone pillar installed by Maharaja of Jaipur. The famous Mughal Garden in the premises of the Rashtrapati Bhawan is known for its collection of unique flowers, plants and trees.

15. India Gate

From the Secretariat complex, one can see the tall arched monument of the India Gate. This 42 m high buff coloured stone structure is the All India War Memorial, popularly known as India Gate. It is raised in the memory of 70,000 soldiers of the Indian army who died in World War I. The Duke of Connaught laid the foundation stone of the archway on February 10, 1921.

The names of the martyrs are inscribed on the stones of the arched gateway for the entire world to see and remember the noble souls who laid down their lives so that others may live.

The gateway has a flight of stairs that leads up to the roof top. It was once used as the vantage point by visitors and photographers. Of late, however, the steps are closed to the public.

At the centre of the open gateway, burns the eternal flame of ‘Amar Jawan Jyoti’. An inverted rifle with a helmet placed on the butt, symbolising a memorial to the impartial soldier, stands under the arch.

16. Jantar Mantar

On the Parliament Street towards Connaught Place, a collection of pink coloured structures comprises one of Maharaja Jai Singh II’s observatories. Jai Singh’s passion for astronomy was even more notable than his prowess as a warrior. Before commencing construction, he sent scholars abroad to study foreign observatories. He constructed this observatory in 1725 A.D., it is dominated by a huge sun dial known as the “Prince of Dials”.

At the first glance, Jantar Mantar appears to be just a curious collection of structures but, in fact, each construction has a specific purpose, such as measuring the position of stars, altitudes and azimuths, or calculating eclipses. Other observatories built by Jai Singh are at Jaipur, Varanasi and Ujjain. The fifth one, Mathura observatory, has now disappeared.

17. Parliament House

One of the most impressive buildings in the heart of the capital is the circular colonnaded building which houses the Indian Parliament. Designed by Edwin Lutyens and built in 1927 A.D. on the picturesque complex near the Secretariat, on Parliament Street, the Parliament House (Sansad Bhawan) is 171 m wide in diameter.

The outer corridor that runs all around the magnificent sandstone structure is enclosed by rounded stone pillars. The three-storeyed building which houses the Legislative Council comprises both houses of Parliament.

Inside, the interiors are well laid out. There is a large Central Hall which is surmounted by an intricately carved dome on the roof top. The three large halls surrounding the Central Hall house the Lok Sabha, the Rajya Sabha and the Parliament library. The space adjacent to these halls is decorated with fountains and gardens that add to the grandeur of the building.

There are approximately 500 rooms in the Parliament House housing the Parliament secretariat, office of the Prime Minister, banks, a post-office, railway reservation counters, etc.

The National Flag flies majestically on the buildings signifying the glory of the Indian democracy which has a government of the people, for the people and by the people.

18. Connaught Place

The vast shopping centre, the Connaught Place, was built during the British Raj, by the Viceroy, to cater to the needs of the sophisticated class. It is named after the visit of the Duke of Connaught to India in 1921 A.D.

The circular formation of buildings in white and the rounded pillars, enclosing a spacious verandah, was conceived by Sir Edwin Lutyens in keeping with the architectural harmony of Rashtrapati Bhawan and India Gate. The elite shopping centre comprised six blocks in the inner circle called Connaught Place and six blocks in the outer circle known as Connaught Circus. Both circles have colonnaded corridors.

In the mid-twenties, the American Express block, then known as Sujan Singh block, was constructed. Consequently in 1932 A.D., Scindia House, Janpath and the Regal building (built by Sobha Singh) came up.

The lotus shaped fountain at the centre, constructed in the sixties, adds to the beauty of the place. The underground shopping centre of PaliKa Bazar and the basement parking lot are recent attempts at modernising the older complex. Flanking the approach to Connaught Place from Janpath are the Eastern and Western Courts designed by Robert Tor Russell, a dignified pair of classical buildings with colonnaded Tuscan verandahs.

19. Gurudwara Bangla Sahib

Built on a sprawling area near Gol Dak Khana, Gurudwara Bangla Sahib, is among the renowned Sikh places of worship in Delhi. The stately building in white marble presents a unique blend of Muslim and Indian architectural forms. The front wall, decorated with balconied projections, have several surmounting domes. The central dome which has an impressive golden covering, makes the Gurudwara one of the spectacular monuments in the Capital.

History records that the 17th century Gurudwara was once the *Bangla* of Raja Jaisingh who was without an heir. He invited Guru Harkrishan, the eighth Guru of the Sikhs to his *Bangla*. The Guru visited the Raja in a crucial period when Delhi was under the grip of an epidemic of small pox. The Guru found a cure for the disease by digging a pool, believed to have been the source of sacred waters that can cure people from small pox.

The sacred amrit sarovar in Bangla Sahib Gurudwara, is, till this day, known for its magical powers in curing a number of diseases.

20. Hanuman Mandir

This sacred Hindu temple stands alongside the Capital’s buzzing shopping complex of Baba Kharak Singh Marg. Said to have been built in the Mughal period, during the reign of Raja Jai Singh, the Hanuman Mandir has its interiors made of smooth white marble. The exteriors were renovated in the year 1964 A.D. The interior walls are partly covered with silver. The other idols of Rama, Lakshmana and Sita are also covered with silver ornamentation.

The awe-inspiring idol of the chief God Hanuman, is believed to have been found during the medieval period. The surging crowds that pour into the temple, do so under a popular religious theory which classifies the temple as a Siddha Peeth (a place of fulfillment of wishes).

Today, a whole range of shops surrounding the temple have marred its original architectural beauty. The weekly *me/a* held at the temple complex, every Tuesday of the week attracts large crowds.

21. The Baha’i House of Worship

The lotus shaped ‘Mother Temple’ of the Baha’is in South Delhi is a unique architectural wonder of the modern times. It is one of the seven Baha’i Houses of worship in the World.

The magnificent structure which looks like a half open lotus bud—the symbol of worship, creation, beauty and purity—has its nine exterior petals in glistening white marble. The nine outer leaves form a canopy over the nine wooden panelled entrances to the temple. The smooth white marble flooring inside the auditorium creates a beautiful atmosphere where the people from all faiths can pray in silence. Around the temple are walkways and stairs which surround the nine pools, representing the floating leaves of the lotus. The pools of water help in cooling the building.

The marble quarried from Mt. Pantiikon mines in Greece was sent to Italy where each panel was computer cut to the requisite size and shaped before being transported to Delhi.

The massive project built over a period of 10 years was designed and built by Fariburz Sahbha, a Baha’i architect.

22. The Cathedral Church

In the heart of the Capital is the imposing structure of the Cathedral Church of the Redemption which has a 63 year old history.

The idea of building the church took its birth when Rev. T.R. Dixon came to serve as Chaplain to the newly proclaimed capital of India. Architect H.A.N. Medd, in consultation with Sir Edwin Lutyens, the man who masterminded the planning of the city of New Delhi, prepared the plan for the church. With the coming of Lord Irwin as Viceroy the construction work was expedited and the foundation was laid on Feb 23, 1927, by the Viceroy himself. The Cathedral Church of the Redemption was finally opened for public worship on January 18, 1931.

The church building is built with white and red Dholpur stone. The porches and interiors are made of white stone, except for the arched ceiling. The Parish Hall of the church was opened by Sarvapalli Radhakrishnan, as President of India, on December 15, 1965.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

1. लौह स्तंभ

कुतुब परिसर में स्थित यह 7.20 मीटर ऊंचा लौह स्तंभ वास्तव में उतना साधारण नहीं है जितना कि यह देखने में लगता है। अति शुद्ध लोहे को ढालकर बनाए गए इस स्तंभ को बने लगभग 1500 वर्ष हो गए हैं पर अभी तक इस पर जंग तक नहीं लगा है।

मूलतः यह स्तंभ 5वीं शताब्दी में मथुरा में निर्मित हुआ था तथा 12वीं शताब्दी में वहां से दिल्ली लाया गया था। आधार में इसका घेरा 6 फुट और 4 इंच है तथा ऊंचाई पर जा कर यह परिमाण 2 फुट 4 इंच रह जाता है।

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद की यह इमारत, जिसके सहन में यह लौह स्तंभ खड़ा है वास्तव में सन् 1196 में शुरू हुए पहले दिल्ली सल्तनत के इस्लामी शासकों के आक्रमणों से सदियों पहले के हिंदू कारीगरों के वैज्ञानिक ज्ञान तथा कला-कौशल का अनूठा स्मारक है। इस स्तंभ के सम्मुख दिखाई देने वाली मेहराबें लगभग दस वर्ष बाद कुतुब-उद्-दीन ने बनवाई थीं। उसके उत्तराधिकारी इल्तुत्तमिश ने सन् 1210 में इस के उत्तर और दक्षिण में जालियां और विशाल चौक बनवा कर इस का विस्तार किया।

इस स्तंभ की उत्पत्ति के संबंध में इतिहास अनेक व्याख्याओं को प्रस्तुत करता है। स्तंभ के एक गुप्तकालीन लेख से ज्ञात होता है कि यह मूलतः विष्णुध्वज था जिसे राजा चंद्र की याद में बनवाया गया था। इस भव्य स्तंभ के समतल तथा चौकोर ऊपरी छोर में एक आला था जिसमें भगवान विष्णु के वाहन-गरुड़-की आकृति थी।

यह एक दिलचस्प मान्यता है कि अगर कोई व्यक्ति इस की तरफ पीठ करके इसे अपनी बांहों में घेर ले और कोई मन्नत मांगे तो उसकी इच्छा अवश्य पूरी हो जाती है।



1. The Iron Pillar

The 7.20 m high Iron Pillar, in the Qutub complex is not quite as simple as it looks. Cast from iron of exceptional purity, the unique pillar has not shown any sign of rusting in roughly 1500 years of its existence. The Iron Pillar originally built in the 5th century A.D. was transported from Mathura to Delhi in the 12th century A.D. The diameter at its base is 6 ft. 4 in. and tapers to 2 ft. 4 in. at the top.

The building of the Quwwat-ul-Islam mosque in the courtyard of which stands the famous iron pillar is, a wonderful monument to the scientific knowledge and skill of Hindu craftsmen. It was commenced by the first Delhi Sultan Mohd. Ghori in about 1196 A.D.; the arches seen in front of the Iron Pillar containing the pulpit were added by his successor Qutub-ud-Din about ten years later. Iltutmish who succeeded in 1210 A.D., began to enlarge the mosque by extending the sanctuary with screens in north and south and by adding a great quadrangle which should have enclosed the original building.

History offers several interpretations to the origin of the Iron Pillar. A Gupta inscription on the pillar records that it was originally a *Vishnudhwaja* set up in memory of King Chandra. The flat, square, towering end of the majestic pillar bears a hole indicating that an image of *Garuda* (The mount of Vishnu) originally decorated the tower.

Interestingly, there goes a belief that if one secretly wishes for something after encircling his arms, around the pillar (with his back to the pillar) his wish will be fulfilled.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

2. कुतुब मीनार

भारत की वास्तु निर्माण कला की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों में कुतुब मीनार भी एक है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि यह भारत के महत्वपूर्ण स्मारकों में से एक है। 72.5 मीटर ऊंची यह गगनचुंबी इमारत परिष्कृत रूप से गोल, लाल पत्थरों एवं संगमरमर से निर्मित है। धरातल पर इसका परिमाण 13.75 मीटर है जो ऊंचाई पर जाकर 2.75 मीटर रह जाता है।

इस भव्य मीनार का निर्माण कार्य 12वीं शताब्दी में प्रारम्भ हुआ था जब कुतुब-उद्-दीन ने कुतुब मस्जिद योजना का विचार किया था। मगर कुतुब-उद्-दीन की मृत्यु पश्चात उसके दामाद और उत्तराधिकारी इल्तुत्तमिश ने इसके अधूरे निर्माण कार्य को पूरा करवाया था। भारत की आज तक की पत्थरों से बनी इस सबसे ऊंची मीनार का उपयोग संभवतः प्रारम्भ में मुअ्जीन नमाज की अज्ञान देने के लिए किया करता था। कुतुब शब्द का अर्थ है—स्तंभ जो न्याय और संप्रभुता का प्रतीक है।

प्रारंभ में कुतुब मीनार की चार मंजिलें थीं किन्तु आज इसकी पाँच मंजिलें हैं जिनमें पहली तीन लाल पत्थर की तथा शेष दो लाल पत्थर और संगमरमर से बनी है। बाहर की तरफ के सजावटी छज्जों से इसकी हर मंजिल अलग दिखाई देती है। इसी प्रकार इसकी प्रथम तीन मंजिलें भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार की हैं। आखिरी मंजिल जो सन् 1368 में फिरोजशाह के काल में क्षतिग्रस्त हो गई थी, उसे उसने दो मंजिलों चौथी एवं पांचवीं में विभक्त कर संगमरमर और लाल पत्थर से बनवाया था।



2. Qutub Minar

The Qutub Minar is an outstanding landmark in India's architectural achievements. Undoubtedly, it is one of the most impressive monuments in the country. Dominating the skyline at a height of 72.5 m, this elegantly circular, sandstone structure has a base of 13.75 m diameter which tapers to a mere 2.75 m at the apex.

The origin of the imposing Minar can be traced to the end of the 12th century when Qutub-ud-Din conceived it as a part of the Qutub Mosque scheme. However, it was eventually completed by his son-in-law and successor Iltutmish. The highest stone tower in India till today, the Qutub Minar also served as the Minar of the mosque from where the Muezzin made his daily call to the worshippers to come to pray. The word, 'Qutub' signifies a pole, the very pivot of justice and sovereignty.

As originally completed the Qutub comprised four storeys but today it has five storeys, the first three in red sandstone and others in marble and sandstone, with each storey clearly distinguishable from outside by decorative balconies. The first three storeys are each designed on a different plan. The fourth storey is simply round. The uppermost storey which was damaged in 1368 A.D. during Firoz Shah's reign, was replaced by him by two storeys made of marble and sandstone.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

3. अलाई दरवाजा, कुतुब परिसर

यह सन् 1305 के आसपास निर्मित हुआ था तथा यह अफगान तुर्क के खानदान के तीसरे वंशज खिलजी गांव के रहने वाले अला-उद्-दीन खिलजी ने भवनों की जो योजना बनाई थी, उसके अंतर्गत निर्मित हुआ था। खिलजी सन् 1296 में दिल्ली के शाही तख्त पर बैठा था।

लाल पत्थरों का यह दरवाजा कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद में दक्षिण की तरफ से प्रवेश करने के लिए बनवाया गया था। योजना में यह दरवाजा चौकोर है जिसकी लम्बाई और चौड़ाई अन्दर से 35 फुट है और बाहर से 55 फुट है। दीवारों की जमीन से छत तक की ऊंचाई 47 फुट तथा मोटाई 11 फुट है।

सदियों पुरानी इस मस्जिद का यह शाही दरवाजा पिछली छः शताब्दियों के दौरान थोड़ा सा क्षतिग्रस्त हुआ है। इस प्रवेशद्वार का एक केन्द्रीय कक्ष भी है जो लगभग 16.75 मीटर लंबा है तथा इसका गुंबद लगभग 18.28 मीटर ऊंचा है। इसकी इस दिशा के मध्य में एक प्रवेशद्वार है जिसके दोनों तरफ जालीदार पत्थरों की खिड़कियां या झरोखे हैं। इस प्रकार का हर प्रवेशद्वार एक अंदरूनी कमरे में खुलता है तथा उसकी छत गुंबदाकार है। लाल पत्थर के ये दरवाजे स्वयं में अपने प्रकार के ऐसे पहले निर्माण हैं जिनमें इस्लामी बनावट एवं सजावट का उपयोग किया गया है।



3. Alai Darwaza, Qutub Complex

Built around 1305 A.D. the Alai-Darwaza was undertaken as part of the building project of Alaud-Din-Khalji—the third in line in the dynasty of Afghan Turks from the village of Khalji—who ascended the throne of Delhi in 1296 A.D. The sandstone gateway was erected to serve as the southern entrance to the Quwwat-ul-Islam mosque. The planning of the gateway is a square measuring 35 feet internally and 55 feet externally. The height of the walls is 47 feet from the floor to the ceiling having a thickness of 11 feet.

The stately entrance to the courtyard of the age-old mosque has suffered little damage in the last six centuries. The gatehouse has a main central hall—a cubical structure of 16.76 m side with a 18.28 m high dome. In the middle of each side is a doorway flanked by a perforated stone window. Each doorway opens into a single inner room with a domed ceiling. The distinctive surface design and the original conception of the dome of the Alai Darwaza (gateway of Alaud-Din) are its unique features.

The sandstone gateway is the first building of its kind to be found in India employing Islamic principles of construction and ornamentation.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

4. ग्यास-उद्-दीन तुगलक का मकबरा

ग्यास-उद्-दीन तुगलक शाह एक शाही तुर्क था तथा सन् 1321 में उसने खिलजी वंश के बाद राजगद्दी संभाली थी। वह कुशल वास्तुकार भी था। उसने दिल्ली में अपनी नई राजधानी बसाई थी। अपनी ऊंची बुर्जों तथा 13 दरवाजों वाला यह किलेबंद नगर-तुगलकाबाद, दिल्ली का तीसरा शहर था। एक तरह से यह किला ग्यास-उद्-दीन की रचनात्मक शक्तियों का प्रतीक था।

इस अष्टकोणीय किले के दक्षिणी मुख्य प्रवेशद्वार के उस पार लाल पत्थर से बना ग्यास-उद्-दीन का मकबरा है। उसने इस मकबरे को स्वयं बनवाया था। इसकी दीवारों पर यहा-वहां संगमरमर का इस्तेमाल इस किलेनुमा मकबरे को विशिष्ट बना देता है।

सफेद संगमरमर के गुंबद पर लाल पत्थर की चोटी इस उत्कृष्ट मकबरे के गौरव को दर्शाती है। मूलतः यह मकबरा वर्षा के पानी से कृत्रिम विशाल तालाब के बीच बनाया गया था तथा एक पुल के जरिए तुगलकाबाद से जोड़ा गया था। आज इस पुल के बीच से कुतुब-बदरपुर सड़क जाती है।



4. Tomb of Ghiyas-ud-Din Tughlaq

Ghiyas-ud-Din Tughlaq Shah, was a Turk nobleman who succeeded the Khaljis in 1321 A.D. The ruler of the Tughlaq dynasty, a keen architect, he added a new capital city in Delhi. The fortified town of Tughlaqabad, with high bastions and 13 gateways, the third city of Delhi, was the creative genius of Ghiyas-ud-Din Tughlaq.

Across the main entrance to the south of the octagonal fort is the red sandstone tomb of Ghiyas-ud-Din himself. The most striking part of its composition is the determined slope of the outer walls, as these are inclined at an angle of seventy-five degrees, suggesting the converging sides of a pyramid. Its square base is sixty-one feet wide and the entire height of the structure, including its sandstone finial, is over eighty feet. A restrained use of marble on the walls of the self-built tomb gives this fortress like structure a distinguished look.

A white marble dome with a circular sandstone marks the crowning glory of this exquisite tomb. Originally, the tomb was built within a vast artificial reservoir of rain water and was also connected to Tughlaqabad by a cause-way. The Qutub-Badarpur road now runs through the cause-way.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

5. फिरोजशाह कोटला

मोहम्मद बिन तुगलक के उत्तराधिकारी फिरोज शाह तुगलक ने सन् 1354 में यमुना नदी के दाहिनी किनारे पर दिल्ली का पांचवां मध्ययुगीन शहर फिरोजाबाद बनवाया था।

उस काल के बहुत ज्यादा जनसंख्या वाले इस नगर के भग्नावशेष दक्षिण में हौज खास से लेकर उत्तर की हरियाली पट्टी तथा पूर्व में यमुना के किनारे तक फैले हैं। मुख्य अवशेष यमुना के किनारे पर स्थित कुश्क-ए-फिरोज या फिरोज शाह का महल है। इस महल की एक खास विशेषता ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के लाल बलुवा पत्थर का पालिश किया गया शंङाकार एकाश्म स्तंभ है, जिसे अशोक स्तंभ के नाम से जाना जाता है। फिरोजशाह अपने महल की शोभा बढ़ाने हेतु इसे अंबाला से लेकर आया था। यह अशोक का दूसरा स्तंभ है तथा इसकी ऊंचाई 13.1 मीटर है। किले की विशाल मोटी दीवारें बड़े-बड़े पत्थरों को गारे से जोड़ कर बनाई गई थीं तथा खुरदरी दीवारों को चिकना बनाने के लिए पलस्तर किया गया था या पालिश किए गए पत्थर की परत चढ़ाई गई थी।



5. Firoz Shah Kotla

Firoz Shah Tughlaq, who succeeded Mohammad-bin-Tughlaq constructed the fifth medieval city of Delhi called Firozabad on the right bank of the river Yamuna in 1354 A.D.

The principal ruins of this once populous city extended from Hauz Khas in the south, to the ridge in the north and the river Yamuna in the east. One of the principal ruins of this period is the Kushik-I-Firoz or palace of Firoz on the banks of river Yamuna. The most distinctive feature of this palace is a monolithic tapering column of polished sandstone from the 3rd century B.C. This structure known as the Ashoka Column was brought by Firoz Shah from Ambala to grace his newly built palace. It is the second column of Ashoka measuring 13.1 m in height.

The massive thick walls of the fort were built with closely packed blocks of stones joint together with mortar, the rough walls were coated with plaster or covered by a layer of polished stone to give its wall a smooth finish.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

6. बड़ा गुम्बद, लोदी बाग

इस्लामी बागों और प्रांगणों का स्वयं में अपना ही एक खास आकर्षण होता है। किसी स्थान पर बाग स्थापित करने का अर्थ है कि उस स्थान के महत्व को उजागर करना। इस्लामी साहित्य के गद्य एवं पद्य दोनों में ही बागों की प्रशंसा की जाती रही है और उनकी तुलना स्वर्ग के बाग के साथ होती रही है।

लेडी विलिंगडन पार्क के नाम से भी पहचाने जाने वाले लोदी बाग में—मोहम्मद शाह सैय्यद का मकबरा, बड़ा गुंबद, शीश गुंबद तथा सिकंदर शाह लोदी का मकबरा—ये चार ऐतिहासिक महत्व के स्मारक स्थित हैं।

15वीं शताब्दी के अंत में सिकन्दर लोदी के शासनकाल में निर्मित मस्जिद हिंदू-इस्लामी वास्तुकला के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कुछ मकबरों के साथ बनी मस्जिदों में बड़ा गुंबद सबसे प्रारंभिक है। यह बारीक प्लास्टर कार्य के लिए प्रसिद्ध है जो भारत में आज भी विद्यमान है। प्रचुर रूप में अलंकृत कुरान की आयतों से इसकी दीवारों को सजाया गया है। खूबसूरत रंग वाले पत्थर का उपयोग मस्जिद की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

एक विशेष आकार की पांच खुली-चौड़ी मेहराबें जिनकी छत सपाट हैं, मस्जिद में नवीनता का समावेश करती हैं।



6. Bara Gumbad, Lodi Garden

Islamic gardens and courtyards have a special charm and attraction of their own. The establishment of a garden meant an opportunity to reveal the essence of a site. In Islamic literature, both in poetry and prose, the garden is lavishly praised and compared to the garden of Paradise.

In the Lodi Gardens, also known as Lady Wellington Park, there are four buildings of historical importance. The tomb of Mohammad Shah Saiyyed, Bara Gumbad, Shish Gumbad and the tomb of Sikandar Lodi.

Built towards the close of the 15th century A.D. during the reign of Sikandar Lodi, the mosque occupies a significant place in the development of Indo-Islamic architecture. Bara Gumbad is the earliest among mosque building attached to some of the tombs. (It has the distinction of possessing the finest plaster work that survives in India today). On the outer walls of the prayer hall, we can see elaborate scrolls, decorations and inscriptions in Arabic. Beautiful coloured tile work is one of the notable features of the mosque. Five wide open arches with a flat top add an innovative touch to the mosque.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

7. पुराने किले का दरवाजा

इस स्मारक के भग्नावशेष आज अत्यंत बुरी स्थिति में हैं। पुराने किले का यह दक्षिणी दरवाजा एक प्रकार से मुगल वास्तुकला का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस दरवाजे के दोनों तरफ झरोखें युक्त दो विशाल घुमावदार मीनारें हैं। दरवाजे की मेहराबदार छत के दोनों तरफ काले व लाल पत्थर से बनी दो छतरियां हैं।

यह माना जाता है कि पुराने किले की जगह, हुमायूँ ने यमुना नदी के किनारे पर शहर बनवाया था जो दीन पनाह के नाम से जाना गया। हालांकि शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को पराजित कर सन् 1538 से 1545 तक के अपने शासन काल में इस किले को पूरा करवाया था लेकिन हुमायूँ ने फिर इसे सन् 1555 में जीत लिया था।

दरवाजे की ऊंची दीवारों पर उत्कीर्ण हाथियों की दो सफेद आकृतियां यह प्रमाणित करती हैं कि उनकी प्रेरणा उसे हिंदू वास्तु शैली से मिली होगी क्योंकि हुमायूँ के काल के सभी भवनों की मूल संकल्पना फारसी शैली की है।



7. Purana Quila Gate

In a sad state of ruins today, this southern entrance to the Purana Quila bears evidence to the elegant architectural style of the Mughals. The gate is flanked by the remains of two huge circular towers with window openings. The arched roof of the gate is covered by an open pedestal with two *chhatris* on either side, made of black and red stone. Humayun is believed to have rebuilt the city at the present site of the Purana Quila, which came to be known as Din Panah. Later, Sher Shah Suri who defeated Humayun, completed the fort during his rule from 1538-1545 A.D., before Humayun once again regained his throne in 1555 A.D.

The two white elephant sculptures engraved on the high gate walls may have been inspired by Hindu architectural styles, though buildings of Humayun's period are basically Persian in concept.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

8. शेर मंडल

यह अष्टकोणीय तथा लाल बलुवा पत्थर से बना भवन दिल्ली स्थित पुराने किले के दक्षिण की तरफ दरवाजे के अंदर स्थित है। भारत में मुगल काल के दौरान एक योग्य शासक शेरशाह सूरी ने इसे बनवाया था। पुराने किले का स्थान दिल्ली का मूल नगर इंद्रप्रस्थ माना जाता है।

शेरशाह सूरी ने संभवतः सोलहवीं शताब्दी में हुमायूं को हराने के बाद पुराने किले के अंदर इस इमारत को बनवाया था। शेरशाह के पांच साल के शासन में देश में काफी सरकारी और प्रशासनिक सुधार हुआ था। उसका खजाना और सरकारी मशीनरी सब पुराने किले में स्थित था।

किले की दीवारें अत्यंत विशाल हैं तथा लाल पत्थर से निर्मित तीन बड़े दरवाजों को सफेद संगमरमर के जड़ाऊ कार्य तथा रंगीन पत्थरों के समतल टुकड़ों से सजाया गया है। इन दरवाजों की डिजाइन ने भवन निर्माण की कलात्मक अलंकरण शैली की शुरुआत की। यह उस काल की स्थापत्य कला के विकास की एक विशेषता थी।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि बाद में हुमायूं ने शेर मंडल का इस्तेमाल एक पुस्तकालय के रूप में किया था। इतिहास में यह भी वर्णित है कि इस इमारत की सीढ़ियों में फिसलकर हुमायूं की मृत्यु हो गई थी।



8. Sher Mandal

The octagonal red sandstone tower of Sher Mandal stands at the entrance of the southern part of the famous Purana Quila in New Delhi. Built by Sher Shah, one of the most able rulers of India during the Mughal period, the location of Purana Quila is supposed to be the site of Indraprastha—the original city of Delhi.

Sher Shah built part of the old fort in the 16th century A.D. after defeating Humayun. During Sher Shah's five year reign, there was much improvement in the Government and administrative system of the country. His residence, treasury and seat of government were all located in the Purana Quila.

The fort has massive walls and three large sandstone gateways decorated with white marble inlay and coloured tiles. The design of these gateways formed the beginning of a more artistic ornamental type of building construction—an important architectural development of the times.

The Sher Mandal is later believed to have been used by Humayun as his library. History also records that the Mughal king fell to his death from the stairs of this very building.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

9. हुमायूँ का मकबरा

भारत पर 16वीं शताब्दी में शासन करने वाला हुमायूँ दूसरा मुगल बादशाह था। चित्र में दिखाए गए विशाल मकबरे का निर्माण हुमायूँ की मृत्यु के लगभग 8 वर्ष पश्चात् उसकी बेगम-बेगा (जिसका प्रचलित नाम हाजी बेगम था) ने करवाया था।

राजधानी के प्रसिद्ध मार्ग मथुरा रोड पर स्थित यह मकबरा पत्थरों के जड़ाऊ कार्य की उस कला का पहला दर्शन कराता है जो कि लगभग एक शताब्दी पश्चात् ताजमहल की सजावट में भी दृष्टिगोचर होती है।

अहाते के बीच में बहुत ऊँचा मकबरा है। यह एक ऊँचे मंच पर बना हुआ है। बीच के अष्टकोणीय कमरे में नकली कब्र है और इसके चारों तरफ जाली वाले कमरे और मेहराबों वाले बरामदे हैं। कमरे के चारों तरफ तीन मेहराबें हैं जिनमें बीच वाली मेहराब सबसे बड़ी है। इसी नक्शे को दूसरी मंजिल पर भी दोहराया गया है।

यह विशाल भवन लाल पत्थरों से बना है, इसके किनारों पर काला और सफेद संगमरमर लगा हुआ है। भारतीय वास्तुकला में दोहरे गुंबद वाली संभवतः प्रथम इमारतों में से एक है। आंतरिक गुंबद मकबरे के कमरों की मेहराबदार छत है तो बाहरी गुंबद इसे बाह्य भव्यता प्रदान करता है। हुमायूँ की बेगम को भी यहीं दफनाया गया है।



9. Humayun's Tomb

Humayun was the second Mughal Emperor to rule India in the 16th century A.D. The lofty tomb of Humayun you see in the picture was built by Bega Begam, Humayun's widow, (popularly known as Haji Begum), eight years after his death.

Standing on the capital's famous Mathura road, the Humayun's Tomb offers the first indications of the development of the art of stone inlay which culminated nearly a century later in the exquisite decorations of the Taj Mahal at Agra.

The lofty mausoleum is located at the centre of the enclosure. It rises from a podium faced by a series of arched openings. The central octagonal chamber houses the cenotaph (false tomb) and is encompassed by chambers and arched lobbies with perforated screens. Each side of the chamber is dominated by three arches, the central one being the highest. This plan is repeated on the second storey. For the first time, double domes appear in Indian architecture, the inner shell forming the vaulted ceiling to the tomb chambers and the outer shell creating a majestic external impact.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

10. लाहौरी दरवाजा

दिल्ली के प्रसिद्ध लाल किले की लाल पत्थरों से बनी यह विशाल इमारत सन् 1648 में शाहजहाँ ने बनवाई थी। इसका भव्य दरवाजा लाहौरी दरवाजा कहलाता है जिसे आप इस चित्र में देख रहे हैं। यह दरवाजा प्रसिद्ध शहर लाहौर के मुखातिब है जो कि अब पाकिस्तान में है।

लाहौरी दरवाजा इस तरह से बना हुआ था कि जब बादशाह अपने सिंहासन पर दीवान-ए-आम में बैठते थे तो वह प्रसिद्ध चांदनी चौक बाजार का पूरा नजारा देख सकते थे। बाद में औरंगजेब ने उस दरवाजे को बंद करवा कर उसके दांयी तरफ एक नया दरवाजा बनवा दिया था। लाहौरी दरवाजे के अन्दर के रास्ते में दोनों तरफ बाजार आता है जिसे मीना बाजार कहा जाता है। यह बाजार एक समय में राजघराने की स्त्रियों के लिए था।

आज भी हर साल “स्वतंत्रता दिवस” के अवसर पर लाहौरी दरवाजे के सामने लाल किले की प्राचीर पर राष्ट्रीय झंडा फहराया जाता है। इसका डिजाइन बड़ा ही सुरुचिपूर्ण है। दरवाजे के ऊपर की छतरियां बड़ी ही भव्य हैं। यह अत्यधिक लंबा-चौड़ा है तथा इसकी निर्मित सजावट अत्यंत मोहक है।

लाहौरी दरवाजे के अतिरिक्त लाल किले में एक और तीन मंजिला दरवाजा है, जिसे दिल्ली दरवाजा कहा जाता है। अर्ध अष्टभुज मीनारों से बने दिल्ली दरवाजे में कई कक्ष हैं जिनके बाहर दो हाथियों की मूर्तियाँ बनी हुई हैं।



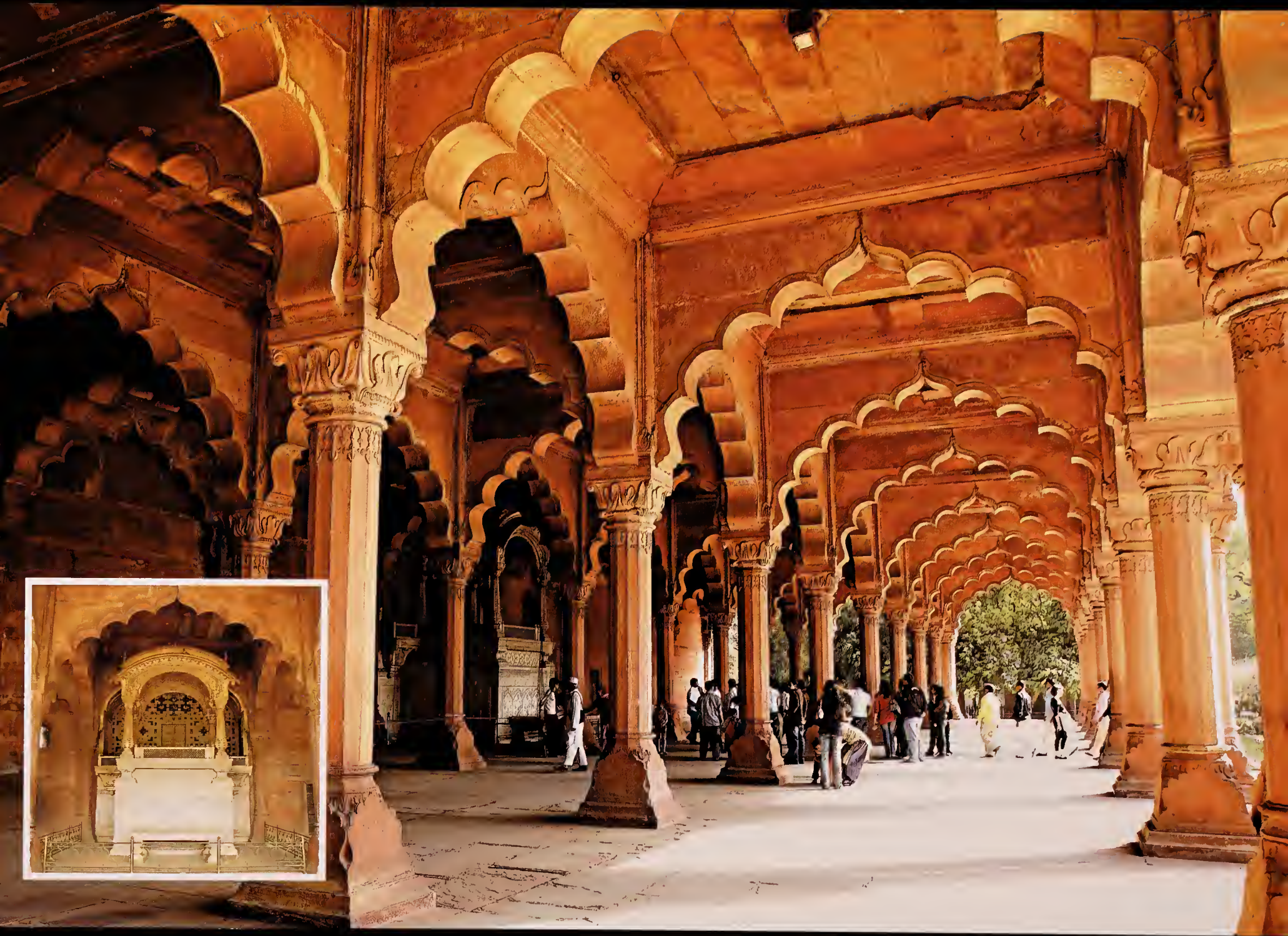
10. Lahori Darwaza

The famous Red Fort in Delhi is an imposing red sandstone structure built by Shahjahan in 1648 A.D. It has a magnificent entrance known as the Lahori Gate, which you see in the picture. This gate is believed to be facing the city of Lahore, now in Pakistan.

The Lahori Darwaza was situated at a point from where Emperor Shahjahan could get a full view of the famous bazar of Chandni Chowk, even as he sat on his throne at the Diwan-i-Am. However, Aurangzeb blocked the gate with a wall and made another gate on its right side. The Lahori Gate leads to a roofed passage with an arcaded shopping centre on either side called Meena Bazar. This was once the shopping centre for the women of the royal household.

The Lahori Darwaza has been tastefully designed. The *chhatris* on the superstructure are very impressive. Its ornamentation which is largely structural is extremely pleasing. The ramparts above the Lahori Gate are now used for the flag hoisting ceremony on Independence Day, every year.

Besides the main Lahori Gate, the fort has another imposing, three-storeyed gateway called the Delhi Gate. Flanked by semi-octagonal towers consisting of several apartments, the Delhi Gate has two elephant statues on the outside.



दिल्ली की वास्तुकला

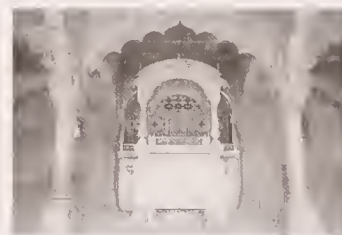
Architecture of Delhi

11. दीवान-ए-आम

बादशाह शाहजहाँ इस हाल का प्रयोग आम जनता की फरियादों को सुनने के लिए किया करते थे। आप दीवान-ए-आम की पेचीदा नक्काशी से बने छज्जों की अद्भुत सुन्दरता को सराहे बिना नहीं रह पायेंगे। इसे एक ऊँचे चौक पर बनाया गया है जो तीन दिशाओं से खुला है।

इस हाल में चबूतरे पर संगमरमर का बना हुआ सिंहासन है, जिसमें कीमती पत्थर जड़े हुए थे जो कि सन् 1739 में नादिरशाह तथा बाद के शासकों ने निकाल लिए। बाद में लॉर्ड कर्जन ने इसे काफी ठीक-ठाक करवा दिया था। इस हाल की सपाट छत लाल पत्थर की मेहराबों पर टिकी है। पीछे की तरफ संगमरमर से बनी छतरी के नीचे बादशाह का सिंहासन था, जहाँ वह आम जनता से मिलते थे।

छतरीनुमा छत की दीवारें रंगबिरंगे पत्थरों से जड़ी हुई हैं जो तरह-तरह के फूलों और पक्षियों के चित्रों को दर्शाती हैं। बादशाह के सिंहासन के पीछे छत के नीचे वाले हिस्से में ग्रीस के देवता आरफियस को साज बजाते दिखाया गया है। आज भी दीवान-ए-आम, मुगलों और हिंदुओं की वास्तुकला के सम्मिश्रण का शानदार प्रमाण है।



11. Diwan-i-Am

Diwan-i-Am is said to have been utilised as the 'hall of public audiences', by Emperor Shahjahan, to hear complaints and disputes of his subjects. Diwan-i-Am is known for its intricate carvings. It is built on a raised plinth and is open on three sides.

The Emperor's throne is placed at the raised recess of the back wall. The throne platform is marble panelled which was engraved with precious stones. In 1739 A.D., these precious stones were removed by Nadir Shah and later rulers. Lord Curzon, however, is said to have restored back much of its grandeur. The hall has a flat roof raised on sandstone arches. Under the marble canopy on the rear side stood the Emperor's throne from where he received the general public.

The walls of the canopied hall are panelled with multicoloured stone inlay work depicting flowers and birds. On the ceiling of the central panel can be seen the figure of the Greek God Orpheus with his flute. Till this day, the Diwan-i-Am bears standing testimony to the rich blend of Mughal and Hindu architecture in India.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

12. दीवान-ए-खास

लाल किले में प्रसिद्ध दीवान-ए-खास, में राजसी दरबार था जहां बादशाह शाहजहाँ खास दरबारियों और मेहमानों से मिलते थे।

यह कक्ष (हॉल) अनूठा है और महल में स्थित सभी मंडपों से अलग ही नजर आता है। यह विशाल आयताकार कक्ष 27.4 मी. × 20.4 मी. है और पूर्णतः सफेद संगमरमर से निर्मित है। बड़े आयताकार हाल के तीन तरफ प्रभावशाली खुली हुई मेहराबें हैं। चौथी तरफ दीवार और खिड़कियों के बीच जाली बनी हुई है। इसके बीच में स्तम्भों पर मेहराबों से बना एक कक्ष है। स्तम्भों के निचले हिस्से में रंगीन पत्थरों से फूल खुदे हुए हैं जबकि ऊपरी भाग में रंग किया हुआ है। दीवान-ए-खास के चारों कोनों में चार स्तम्भ छतरी नुमा बने हुए हैं।

यह हाल खूबसूरत मोर सिंहासन तख्त-ए-ताऊस के लिए विख्यात है जो कि इसके बीच में संगमरमर के मंच पर रखा हुआ था। यह सिंहासन सोने का बना हुआ था जिसमें मोर पंख बने हुए थे और अनगिनत कीमती पत्थर जड़े हुए थे। मोर के बीच में अकेले पन्ने से तराशा हुआ तोता था। इस सिंहासन को नादिरशाह सन् 1739 में ईरान ले गया था। इसके बीच में नहर-ए-बहिश्त बहती थी।



12. Diwan-i-Khas

The luxurious royal chamber where Emperor Shahjahan gave private audience to a selected set of courtiers and visitors, at the Red Fort is well-known as Diwan-i-Khas.

The hall is exclusive and stands out of all the pavilions in the palace. The large rectangular hall measures 27.4 m by 20.4 m and is built entirely of white marble. It has elegant open arches on three sides. The fourth side has window openings in between *jali* wall panels. There is also a central chamber surrounded by aisles of arches rising from *piers*. The lower parts of the *piers* are inlaid with floral designs while the upper portions are gilded and painted. Four pillared *chhatris* decorate the ceiling of the Diwan-i-Khas.

The hall was renowned for the magnificent Peacock throne which stood over the marble pedestal at the centre. The throne made of solid gold was engraved with peacock figurines shimmering with countless precious stones. In between the peacock figures was a parrot carved out of a single emerald. The stone studded master-piece was, however, removed to Iran by Nadir Shah in 1739 A.D. The royal palace also had the *Nahir-i-Bihist*—flowing through the central parts.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

13. जामा मस्जिद

मुगलों द्वारा दिल्ली में बनाई गई आखिरी इमारतों में शाहजहाँ द्वारा बनवायी गई जामा-मस्जिद भी है जो कि भारत की सबसे बड़ी मस्जिद है। मशहूर लाल किले के सामने बनी यह प्रभावशाली इमारत सोलहवीं शताब्दी मध्य की मुगल कला का एक शानदार नमूना है।

यह मस्जिद पाँच हजार मजदूरों और कारीगरों द्वारा छः साल में बन कर तैयार हुई। इस इबादत के स्थान में 400 वर्ग मीटर का प्रांगण है जिसमें सीढ़ियों के द्वारा पहुँचा जा सकता है। पूर्वी द्वार से लगा गलियारा पहले शाही खानदान के लिए आरक्षित था, जिसमें प्रत्येक के लिए एक संगमरमर का पत्थर लगा हुआ था। नीले, लाल रंग के चौकोर पत्थर लगे हुए हैं जो कि आम आदमियों के लिए है। मस्जिद में बड़े-बड़े द्वार, स्तंभ और मेहराब होने के साथ संगमरमर के बने गुम्बद और छतरियाँ हैं। प्रांगण, स्तंभ वाली दीवारों से घिरा हुआ है और उसके कोने में गुंबद वाला मण्डप है। पश्चिम में आयताकार इबादत की जगह 6.1 मी. × 27.5 मी. की है जो कि ग्यारह नक्काशी किये हुए मेहराबों से घिरी है। इसके ऊपर खुदाई किये हुए सफेद और काले संगमरमर के पत्थर लगे हुए हैं। अग्रभाग के कोनों पर स्थित दो मिनारों की ऊँचाई 130 फीट है।

इसके मुख्य हाल के ऊपर सफेद और काले संगमरमर से बने तीन खूबसूरत गुम्बद हैं जो कि शाहजहाँ के समय की वास्तुकला की विशेषता है। यहां पर विशेष धार्मिक अवसरों पर सामूहिक इबादत होती है।



13. Jama Masjid

The largest mosque in India, Jama Masjid was the last of the buildings constructed by Emperor Shahjahan in the mid 16th century A.D. Built in a course of six years, by about 5,000 workmen, this ancient place of worship has a vast courtyard of 400 sq. m. which is reached by a flight of stairs. The gallery within the east gateway was once reserved for royalty. Below, the square sandstone slabs were meant for the commoners. The courtyard in the mosque is enclosed by pillared corridors with domed pavillions at the corner. The rectangular prayer-hall on the west measures 6.1 m by 27.5 m, enclosed by 11 engraved arches. Inscriptional panels in white and black marble run above the arches.

The two minars at the corners of the facade are 130 feet high.

The hall is surmounted by three shapely domes decorated with alternate stripes of black and white marble—a new feature of Shahjahan's architecture. Mass prayers are held here on Muslim religious occasions.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

14. राष्ट्रपति भवन

राष्ट्रपति भवन भारत के महामहिम राष्ट्रपति का सरकारी निवास है। इसे दो मशहूर अंग्रेजों, सर एडविन लुचियंश और सर हरबर्ट बेकर द्वारा बनाया गया था। राष्ट्रपति भवन की प्रभावशाली इमारत, इसके विशाल आकार और 330 एकड़ जमीन की सुन्दर उपयोगिता के लिए मशहूर है। इस इमारत में इंग्लैंड, ग्रीस, रोम, भारत एवं अन्य देशों की वास्तुकला का सुन्दर सम्मिश्रण देखने को मिलता है। वह ज्यादातर रोमन वास्तुकला पर आधारित है। रायसीना की पहाड़ी पर बना यह भवन पहली बार सन् 1929 में निवास के लिए उपयोग में लाया गया।

इस भवन में पूर्व की तरफ से सीढ़ियों पर चढ़ने के बाद ही मण्डप में पहुंचा जा सकता है। इसका दरबार हाल अत्यंत प्रभावशाली है जिसका गुम्बद बौद्ध स्तूप से मिलता है। इसमें कई राजसी दरबार और कमरे हैं। दरबार हाल और अशोक हाल अनेक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समारोहों और सभाओं का स्थान है। इस भवन में कुल 340 कमरे हैं।

राष्ट्रपति भवन के बाहर पत्थर का बना जयपुरी स्तंभ है जिसे महाराजा जयपुर ने बनवाया था।

राष्ट्रपति भवन के पश्चिम में प्रसिद्ध मुगलबाग अपने शानदार पेड़-पौधों के संग्रह के लिए मशहूर है।



14. Rashtrapati Bhawan

Rashtrapati Bhawan is the official residence of the President of India. It was designed by the two famous British architects, Edwin Lutyens and Herbert Baker. This impressive building is known for its imposing size and aesthetic use of 330 acres of land. It is essentially built in neo-Roman style but incorporates Indian elements like Buddhist railings, Islamic pavilions and Hindu brackets. Built on the Raisina Hill, the Bhawan was first occupied in 1929 A.D.

The Rashtrapati Bhawan can be entered from the east gate by a wide flight of steps leading to the portico. The magnificent Darbar Hall has a spectacular dome, the replica of a Buddhist stupa. It has stately courts and spacious state rooms. The Darbar Hall and the Ashoka Hall have been the venues of many assemblies and ceremonies of national and international significance. The entire complex contains 340 rooms.

Outside the Rashtrapati Bhawan gates, stands the famous Jaipur column—a stone pillar installed by Maharaja of Jaipur. The famous Mughal Garden in the premises of the Rashtrapati Bhawan is known for its collection of unique flowers, plants and trees.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

15. इंडिया गेट

यदि आप केन्द्रीय सचिवालय से राजपथ पर चलें तो आप बहुत ऊँची मेहराबों से बनी इंडिया गेट की इमारत को देखेंगे। इस 42 मी. ऊँची स्लेटी रंग की इमारत का वास्तविक नाम आल इंडिया वार मेमोरियल है। इसे प्रथम विश्वयुद्ध में शहीद हुए भारतीय सेना के 70,000 जवानों की याद में बनाया गया था। 10, फरवरी 1921 को ड्यूक ऑफ कनाट ने इंडिया गेट की नींव डाली थी।

इसके मेहराबदार दरवाजे पर शहीदों के नाम खुदे हुए हैं, जिससे कि सारा संसार उन अमर आत्माओं को याद कर सके जिन्होंने अपना जीवन बलिदान कर देश की रक्षा की थी।

इस दरवाजे पर बनी सीढ़ियाँ ऊपर छत तक जाती हैं। किसी समय में इसे फोटोग्राफी और आगुन्तकों के देखने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। परन्तु अब इन सीढ़ियों को आम आदमियों के चढ़ने के लिए बंद कर दिया गया है।

इस दरवाजे के बीच में एक अमर जवान ज्योति जल रही है और इसके बीचों-बीच उल्टी बन्दूक के ऊपरी हिस्से में एक हेलमेट रखा है जो कि अमर जवानों की याद दिलाता है।



15. India Gate

From the Secretariat complex, one can see the tall arched monument of the India Gate. This 42 m high buff coloured stone structure is the All India War Memorial, popularly known as India Gate. It is raised in the memory of 70,000 soldiers of the Indian army who died in World War I. The Duke of Connaught laid the foundation stone of the archway on February 10, 1921.

The names of the martyrs are inscribed on the stones of the arched gateway for the entire world to see and remember the noble souls who laid down their lives so that others may live.

The gateway has a flight of stairs that leads up to the roof top. It was once used as the vantage point by visitors and photographers. Of late, however, the steps are closed to the public.

At the centre of the open gateway, burns the eternal flame of 'Amar Jawan Jyoti'. An inverted rifle with a helmet placed on the butt, symbolising a memorial to the impartial soldier, stands under the arch.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

16. जंतर-मंतर

संसद मार्ग से कनाॅट प्लेस की ओर चलने पर कुछ ही दूरी पर स्थित है—महाराजा जय सिंह द्वितीय की वेधशाला, जिसमें गुलाबी आभा लिए अनेक विचित्र निर्माण स्थित हैं। राजा जयसिंह द्वितीय की खगोलशास्त्र के प्रति ललक इतनी अधिक थी कि उन्होंने इस वेधशाला के निर्माण से पहले अपने विद्वानों को विदेशों में भेजा था ताकि वे विदेशी वेधशालाओं के बारे में अध्ययन कर सकें। सन् 1725 में इस वेधशाला का निर्माण हुआ था और इस वेधशाला का प्रमुख आकर्षण स्थल सूर्य घड़ी है, जिसे ‘धूप घड़ियों के राजकुमार’ के नाम से भी जाना जाता है।

जंतर-मंतर पहली नजर में विचित्र ढांचों का सिर्फ एक समूह सा लगता है पर वास्तव में हर निर्माण का अपना एक विशेष उद्देश्य है, जैसे कि सितारों की सही स्थिति को जानना या ग्रहणों की गणना करना। राजा जयसिंह ने जयपुर, वाराणसी तथा उज्जैन में भी वेधशालाएं बनवाई थीं। मथुरा स्थित पांचवी वेधशाला अब नहीं है।



16. Jantar Mantar

On the Parliament Street towards Connaught Place, a collection of pink coloured structures comprises one of Maharaja Jai Singh II's observatories. Jai Singh's passion for astronomy was even more notable than his prowess as a warrior. Before commencing construction, he sent scholars abroad to study foreign observatories. He constructed this observatory in 1725 A.D., it is dominated by a huge sun dial known as the "Prince of Dials".

At the first glance, Jantar Mantar appears to be just a curious collection of structures but, in fact, each construction has a specific purpose, such as measuring the position of stars, altitudes and azimuths, or calculating eclipses. Other observatories built by Jai Singh are at Jaipur, Varanasi and Ujjain. The fifth one, Mathura observatory, has now disappeared.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

17. संसद भवन

राजधानी के बीच में बनी बहुत प्रभावशाली इमारतों में एक गोलाकार स्तम्भों से बनी इमारत है, जो कि भारतीय संसद के नाम से प्रसिद्ध है। इसे सर एडविन लुचियंस की योजना पर सन् 1927 में बनाया गया। यह केन्द्रीय सचिवालय के चित्रोपम परिसर में स्थित है तथा इसका व्यास 171 मी. चौड़ा है।

लाल पत्थर से बनी इस प्रभावशाली इमारत का बाहर का बरामदा गोलाकार स्तम्भों से घिरा है। तीन मंजिलों की यह इमारत भारत की कानून बनाने की सर्वोच्च संस्था है जिसमें संसद के दोनों सदनों, राज्य सभा और लोक सभा की बैठकें होती हैं।

अन्दर का भाग भी बहुत अच्छे तरीके से बना है। इसके मध्य में एक सभागृह है जो कि पेचीदा नक्काशी से बने गुम्बद से ढका हुआ है। मध्य सभागृह आसपास के तीन बड़े हालों से घिरा है जो कि लोक सभा, राज्य सभा और संसद पुस्तकालय है। इन सभागृहों के साथ का स्थान फव्वारों और पार्क से सजा है जो इस इमारत को बहुत वैभवशाली बनाता है।

इसमें करीब 500 कमरे हैं जिसमें संसद सचिवालय, प्रधानमंत्री का कार्यालय, बैंक, डाकघर, रेलवे आरक्षण के ऑफिस हैं।

राष्ट्रीय झंडा इस इमारत पर बड़े गर्व से लहराता है और भारतीय लोकतंत्र का महत्व दर्शाता है कि सरकार जनता की, जनता के लिए और जनता द्वारा बनाई गई है।



17. Parliament House

One of the most impressive buildings in the heart of the capital is the circular colonnaded building which houses the Indian Parliament. Designed by Edwin Lutyens and built in 1927 A.D. on the picturesque complex near the Secretariat, on Parliament Street, the Parliament House (Sansad Bhawan) is 171 m wide in diameter.

The outer corridor that runs all around the magnificent sandstone structure is enclosed by rounded stone pillars. The three-storeyed building which houses the Legislative Council comprises both houses of Parliament.

Inside, the interiors are well laid out. There is a large Central Hall which is surmounted by an intricately carved dome on the roof top. The three large halls surrounding the Central Hall house the Lok Sabha, the Rajya Sabha and the Parliament library. The space adjacent to these halls is decorated with fountains and gardens that add to the grandeur of the building.

There are approximately 500 rooms in the Parliament House housing the Parliament secretariat, office of the Prime Minister, banks, a post-office, railway reservation counters, etc.

The National Flag flies majestically on the buildings signifying the glory of the Indian democracy which has a government of the people, for the people and by the people.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

18. कनॉट प्लेस

राजधानी के मुख्य बाजार कनॉट प्लेस को अंग्रेजी राज के समय वायसराय ने विशेष व्यक्तियों के लिए बनवाया था। इसका नामकरण सन् 1921 में कनॉट के ड्यूक की भारत यात्रा की याद में रखा गया है। इसकी सफेद और गोल स्तम्भों वाली गोल इमारतों को सर एडविन लुचियंस ने राष्ट्रपति भवन और इंडिया गेट के साथ ही बनवाया था। यह खूबसूरत बाजार जिस समय बना था, तब छः खण्ड अन्दर के थे जिन्हें कनॉट प्लेस कहा जाता था और छः खण्ड बाहर के थे जिन्हें कनॉट सर्कस कहा जाता था। दोनों में ही स्तम्भ वाले बरामदे हैं।

बीसवीं शताब्दी के मध्य में जब नई दिल्ली का शहर बन रहा था तब अमेरिकन एक्सप्रेस खण्ड, जिसे सुजान सिंह खंड कहा जाता था, बनाया गया। बाद में सन् 1932 में सिंधिया हाऊस, जनपथ और चलचित्रगृह रीगल सरदार शोभा सिंह के द्वारा बनवाये गये।

छठे दशक में इसकी खूबसूरती को बढ़ाने के लिए बीच में एक फव्वारा बनवाया गया जो कि कमल के फूल की बनावट का है। हाल ही में जमीन के नीचे का पालिका बाजार और कार पार्क भी बनवाये गये हैं। जनपथ से कनॉटप्लेस तक बगल में ईस्टर्न एवं वेस्टर्न कोर्ट हैं जिन्हें राबर्ट रसैल ने स्तंभाकार टस्कन बरामदों वाले प्रतिष्ठित भवनों की उत्कृष्ट जोड़ी के रूप में डिजाइन किया था।



18. Connaught Place

The vast shopping centre, the Connaught Place, was built during the British Raj, by the Viceroy, to cater to the needs of the sophisticated class. It is named after the visit of the Duke of Connaught to India in 1921 A.D.

The circular formation of buildings in white and the rounded pillars, enclosing a spacious verandah, was conceived by Sir Edwin Lutyens in keeping with the architectural harmony of Rashtrapati Bhawan and India Gate. The elite shopping centre comprised six blocks in the inner circle called Connaught Place and six blocks in the outer circle known as Connaught Circus. Both circles have colonnaded corridors.

In the mid-twenties, the American Express block, then known as Sujan Singh block, was constructed. Consequently in 1932 A.D., Scindia House, Janpath and the Regal building (built by Sobha Singh) came up.

The lotus shaped fountain at the centre, constructed in the sixties, adds to the beauty of the place. The underground shopping centre of Palika Bazar and the basement parking lot are recent attempts at modernising the older complex. Flanking the approach to Connaught Place from Janpath are the Eastern and Western Courts designed by Robert Tor Russell, a dignified pair of classical buildings with colonnaded Tuscan verandahs.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

19. गुरुद्वारा बंगला साहिब

गोल डाकखाने के पास बहुत बड़े स्थान में बना गुरुद्वारा बंगला साहिब दिल्ली में सिख समुदाय का प्रमुख धार्मिक स्थल है। सफेद संगमरमर से बनी यह शानदार इमारत, इस्लामी और भारतीय वास्तुकला का सम्मिश्रण है। सामने की दीवार गुम्बददार छज्जों से सजी हुई है। बीच की गुम्बद पर सोने का पानी चढ़ा हुआ है जिससे यह गुरुद्वारा राजधानी की एक शानदार इमारतों में से एक बन गया है।

इतिहास के अनुसार 17वीं शताब्दी में यह गुरुद्वारा राजा जयसिंह का बंगला था जिनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था। यह कहा जाता है कि राजा ने एक बार सिखों के आठवें गुरु श्री हरकिशन साहिब को अपने बंगले पर बुलाया था। उस समय दिल्ली में चेचक की महामारी फैली हुई थी, गुरु ने इस बीमारी का इलाज बंगले के प्रांगण में, जहां वह ठहरे थे, वहाँ एक तालाब को खोदकर पाया। तालाब के उस पवित्र जल से चेचक का प्रकोप कम हो गया।

आज भी यह माना जाता है कि सरोवर का पवित्र जल अमृत के समान है व उसमें रोगियों को स्वस्थ करने की शक्ति है।



19. Gurudwara Bangla Sahib

Built on a sprawling area near Gol Dak Khana, Gurudwara Bangla Sahib, is among the renowned Sikh places of worship in Delhi. The stately building in white marble presents a unique blend of Muslim and Indian architectural forms. The front wall, decorated with balconied projections, have several surmounting domes. The central dome which has an impressive golden covering, makes the Gurudwara one of the spectacular monuments in the Capital.

History records that the 17th century Gurudwara was once the *Bangla* of Raja Jaisingh who was without an heir. He invited Guru Harkrishan, the eighth Guru of the Sikhs to his *Bangla*. The Guru visited the Raja in a crucial period when Delhi was under the grip of an epidemic of small pox. The Guru found a cure for the disease by digging a pool, believed to have been the source of sacred waters that can cure people from small pox.

The sacred amrit sarovar in Bangla Sahib Gurudwara, is, till this day, known for its magical powers in curing a number of diseases.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

20. हनुमान मंदिर

राजधानी के व्यस्त व्यावसायिक केन्द्र बाबा खड्ग सिंह मार्ग पर यह पावन हिन्दू मन्दिर स्थित है। माना जाता है कि यह मन्दिर 18वीं शताब्दी में राजा जयसिंह ने बनवाया था। मन्दिर के अन्दर का हिस्सा सफेद संगमरमर का बना हुआ है तथा प्रांगण में आधी दीवार की ऊंचाई तक शुद्ध चांदी की मूर्तियां बनी हुई हैं। सन् 1964 में इसके बाहर के हिस्से की मरम्मत की गयी थी। राम, लक्ष्मण और सीता की अन्य मूर्तियां भी चांदी से अलंकृत हैं।

प्रमुख भगवान हनुमान की श्रदेय पूर्ति के संबंध में यह माना जाता है कि भगवान हनुमान की विशाल मूर्ति मध्यकालीन है। मन्दिर में उमड़ती हुई भीड़ इस लोकप्रिय धार्मिक धारणा को मानती है कि मंदिर “सिद्ध-पीठ” है (इस जगह पर सब की इच्छा पूर्ण होती है)।

अब इसकी चारों तरफ की दुकानों ने इस मन्दिर की मौलिक वास्तुकला की खूबसूरती को समाप्त कर दिया है। हर मंगलवार को इस मन्दिर के आसपास साप्ताहिक बाजार लगता है जिसमें बहुत ही भीड़ होती है।



20. Hanuman Mandir

This sacred Hindu temple stands alongside the Capital's buzzing shopping complex of Baba Kharak Singh Marg. Said to have been built in the Mughal period, during the reign of Raja Jai Singh, the Hanuman Mandir has its interiors made of smooth white marble. The exteriors were renovated in the year 1964 A.D. The interior walls are partly covered with silver. The other idols of Rama, Lakshmana and Sita are also covered with silver ornamentation.

The awe-inspiring idol of the chief God Hanuman, is believed to have been found during the medieval period. The surging crowds that pour into the temple, do so under a popular religious theory which classifies the temple as a Siddha Peeth (a place of fulfillment of wishes).

Today, a whole range of shops surrounding the temple have marred its original architectural beauty. The weekly mela held at the temple complex, every Tuesday of the week attracts large crowds.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

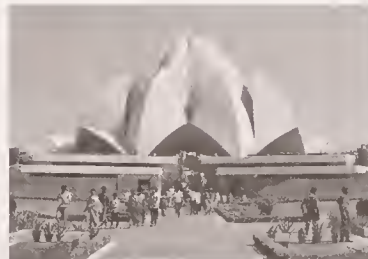
21. बहाई का पूजा स्थल

दक्षिण दिल्ली में बना कमल के फूल के आकार का बहाई धर्म का “मातृ-मन्दिर” आज के समय की वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। यह मंदिर बहाई धर्म के संसार के सात पूजा स्थलों में एक है।

यह विशाल इमारत आधे खुले कमल के फूल की तरह बनाई गई है। कमल, जो की पूजा, सृष्टि, प्राकृतिक खूबसूरती व पवित्रता का चिन्ह है—इसकी नौ फूल पंखुड़ियाँ चमकते हुए सफेद संगमरमर की बनी हैं। बाहर की नौ पत्तियां अंदर जाने वाले नौ दरवाजों पर छतरी बनाती हैं। सभा भवन के अन्दर का फर्श—जहाँ पर प्रत्येक धर्म के लोग आ कर अपनी पूजा कर सकते हैं—सफेद चिकने संगमरमर का बना है। मंदिर के चारों तरफ पैदल पथ पर सीढ़ियां हैं जो कि नौ तालाबों के इर्द-गिर्द हैं तथा पानी में तैरते कमल दलों की प्रतीक हैं। यह नौ तालाब इमारत को ठंडा रखने में भी सहयोग देते हैं।

सफेद पत्तियों के लिए डोलेमाईट दिल्ली के निकट अलवर से, रेत जयपुर से तथा सफेद सीमेंट कोरिया से आयात की गई थी। ग्रीस में पेंटीलीकोन पहाड़ की खानों से संगमरमर को निकाला गया था, जिसे भेजकर कंप्यूटर के द्वारा नियमित आकार का कटवाया गया, बाद में इसे भारत में आयात करा गया।

इस का निर्माण बहाई धर्म के उपासक तथा वास्तुकार फरिवुर्ज साहब द्वारा दस करोड़ रुपयों की लागत से दस वर्ष में करवाया गया था।



21. The Baha'i House of Worship

The lotus shaped 'Mother Temple' of the Baha'is in South Delhi is a unique architectural wonder of the modern times. It is one of the seven Baha'i Houses of worship in the World.

The magnificent structure which looks like a half open lotus bud—the symbol of worship, creation, beauty and purity—has its nine exterior petals in glistening white marble. The nine outer leaves form a canopy over the nine wooden panelled entrances to the temple. The smooth white marble flooring inside the auditorium creates a beautiful atmosphere where the people from all faiths can pray in silence. Around the temple are walkways and stairs which surround the nine pools, representing the floating leaves of the lotus. The pools of water help in cooling the building.

The marble quarried from Mt. Pantlikon mines in Greece was sent to Italy where each panel was computer cut to the requisite size and shaped before being transported to Delhi.

The massive project built over a period of 10 years was designed and built by Fariburz Sahbha, a Baha'i architect.



दिल्ली की वास्तुकला

Architecture of Delhi

22. कैथीड्रल गिरजाघर

यदि आप राजधानी में राष्ट्रपति भवन के नीचे सड़क पर जायें तो आप कैथीड्रल चर्च ऑफ दि रिडेमशॉन (उद्धार के लिए बना गिरजाघर) की खूबसूरत इमारत को देखेंगे। यह गिरजाघर लगभग 63 साल पुराना है।

इस गिरजाघर के बनाने का विचार तब आया जब मान्यवर टी.आर. डिक्सन, भारत की नयी राजधानी में चेपलिन बनकर आये। वास्तुकार एच.ए.एन. मेड्ड ने सर एडविन लुचियंस—जिन्होंने नई दिल्ली शहर की योजना बनाई थी—के साथ विचार विमर्श करके इसे बनवाया था। लॉर्ड इरविन जब वायसराय बन कर भारत आये तो इसके निर्माण का कार्य बहुत तेजी से आरम्भ हुआ और उन्होंने खुद 23 फरवरी, 1927 को इसका शिलान्यास किया। “कैथीड्रल ऑफ दि रिडेमशॉन” 18 जनवरी, 1931 को जनसमूह के लिए खोला गया था।

गिरजाघर की इमारत सफेद रंग और लाल रंग के धौलपुरी पत्थरों से बनी है। इसकी मेहराबदार छत को छोड़कर ड्योढ़ी और भीतरी भाग सफेद पत्थरों से बने हुए हैं।

15 सितम्बर, 1965 को भारत के राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इस गिरजाघर के पारिश हाल का उद्घाटन किया था।



22. The Cathedral Church

In the heart of the Capital is the imposing structure of the Cathedral Church of the Redemption which has a 63 year old history.

The idea of building the church took its birth when Rev. T.R. Dixon came to serve as Chaplain to the newly proclaimed capital of India. Architect H.A.N. Medd, in consultation with Sir Edwin Lutyens, the man who masterminded the planning of the city of New Delhi, prepared the plan for the church. With the coming of Lord Irwin as Viceroy the construction work was expedited and the foundation was laid on February 23, 1927, by the Viceroy himself. The Cathedral Church of the Redemption was finally opened for public worship on January 18, 1931.

The church building is built with white and red Dholpur stone. The porches and interiors are made of white stone, except for the arched ceiling. The Parish Hall of the church was opened by Sarvapalli Radhakrishnan, as President of India, on December 15, 1965.

